Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

قُلِ اللّٰھُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِی الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ بِیَدِكَ الْخَیْرُ ⊙

(सूरत आले-इम्रान आयत :27)

अनुवाद: तू कह दे हे मेरे अल्लाह! सल्तनत के मालिक! जू जिसे चाहे शासन प्रदान करे और जिस से चाहे छीन लेता है। और तू जिसे चाहे सम्मान प्रदान करता है और जिसे चाहे अपमानित कर देता है। भलाई तेरे ही हाथ में है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِیْمِ وَعَلٰی عَبْدِهِ الْمَسِیْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष 4

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

अंक 29

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

14 ज़िल्कअद: 1440 हिजरी कमरी 18 वफा 1397 हिजरी शमसी 18 जुलाई 2019 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़ज़ल नाज़िल करे। आमीन

ज़मीन तथा आसमान की गवाहियां किसी नक्ली और बनावटी ख़ुदा की हस्ती का सबूत नहीं देतीं बल्कि उस اَحَدُ الصَّمَدُ لَمْ یَلِدْ وَلَمْ یُوْلَدْ ख़ुदा की हस्ती को दिखाती हैं जो ज़िन्दा और क़ायम ख़ुदा है और जिसे इस्लाम पेश करता है।

यह ख़ूब याद रखो कि इलहाम की ज़रूरत हार्दिक सन्तोष और दिल की दृढ़ता के लिए बहुत ज़रूरी है।

दरख़्तों के पत्ते पते पर और आसमान के ग्रहों पर इस का नाम बड़े मोटे अक्षरों में लिखा हुआ है।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

इस्लाम का ख़ुदा

और जान लें कि इस्लाम का ख़ुदा ऐसा गोरख धंदा नहीं कि उसे अक़्ल पर पत्थर मार कर ज़ोर ज़बरदस्ती मनवाया जाए और फ़ितरत में कोई भी सबूत उस के लिए ना हो बल्कि फ़ितरत के फैले हुए पृष्ठों में इस के इतने निशान हैं जो साफ़ बतलाते हैं कि वह है। एक-एक चीज़ इस सृष्टि में इस निशान और तख़्ती की तरह है जो हर सड़क या गली के सिर पर इस सड़क या मुहल्ला या शहर का नाम मालूम करने के लिए लगाए जाते हैं ख़ुदा की तरफ़ मार्गदर्शन करती है और इस मौजूद हस्ती का पता ही नहीं बल्कि सन्तुष्ट कर देने वाला सबूत देती है। ज़मीन तथा आसमान की गवाहियां किसी नक्ली और बनावटी ख़ुदा की हस्ती का सबूत नहीं देतीं बल्कि उस اَحَدُ الصَّمَدُ لَمْ یَلِدْ وَلَمْ یُوْلَدْ ख़ुदा की हस्ती को दिखाती हैं जो ज़िन्दा और क़ायम ख़ुदा है और जिसे इस्लाम पेश करता है। अत: पादरी फ़नडर जिस ने पहले-पहले हिन्दुस्तान में आकर मज़हबी मुनाज़रों में क़दम रखा और इस्लाम पर आरोप किए अपनी किताब मीज़ानुल हक़ मैं ख़ुद ही सवाल के तौर पर लिखता है कि अगर कोई ऐसा द्वीप हो जहां तस्लीस की शिक्षा ना दी गई हो तो क्या वहां के रहने वालों पर आख़िरत में तस्लीस की आस्था के आधार पर पूछताछ होगी? फिर ख़ुद ही जवाब देता है कि उनसे तौहीद के बारे में पूछा जाएगा। इस से समझ लो कि अगर तौहीद का नक़्शा हर वस्तु में ना पाया जाता और तस्लीस एक बनावटी और कृत्रिम आस्था ना होती तो अक़ीदा तौहीद की बिना पर पूछताछ क्यों होती?

तौहीद का नक़्श क़ुदरत की हर चीज़ में रखा हुआ है

बात असल में यह है कि इन्सान की फ़ितरत ही में

اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ قَالُوْا بَلٰی

(अल्अराफ़:173) नक़्श किया गया है और तस्लीस से कोई तुलना इन्सानी फितरत और संसार की सारी वस्तुओं को नहीं। एक क़तरा पानी का देखो तो वह गोल निकलता है। तीन की शक्ल में नहीं निकलता। इस से भी साफ़ तौर पर यही पाया जाता है कि तौहीद का नक़्श क़ुदरत की हर चीज़ में रखा हुआ है। ख़ूब ध्यान से देखो कि पानी का क़तरा गोल होता है और गोल शक्ल में तौहीद ही होती है इसलिए कि वह जिहत को नहीं चाहती और मुसल्लस शक्ल जिहत को चाहती है। अत: आग को देखो शक्ल भी मख़रूती है और वह भी गोलाई अपने अंदर रखती है। इस से भी तौहीद का नूर चमकता है। ज़मीन को लो और अंग्रेज़ों ही से पूछो कि इस की शक्ल कैसी है? कहेंगे गोल। अत: तिब्ब की तहक़ीक़ातें जहां तक होती चली जाएँगी वहां तौहीद ही तौहीद निकलती चली जाएगी। अल्लाह तआला इस आयत اِنَّ فِیْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ۔الآیۃ (आले इम्रान : 191) में बतलाता है कि जिस ख़ुदा को क़ुरआन प्रस्तुत करता है इस के लिए ज़मीन आसमान दलीलों से भरे पड़े हैं।

मुझे एक हकीम की बात बहुत ही पसंद आती है कि अगर सारी किताबें दरिया में बहा दी जाएं तो फिर भी इस्लाम का ख़ुदा बाक़ी रह जाएगा। इसलिए कि वह मुसल्लस और कहानी नहीं। वास्तव में दृढ़ बात वही है जिसकी सच्चाई किसी ख़ास चीज़ पर आधारित हो कि अगर वह ना हो तो इस का पता ही न हो। क़िस्सा कहानी का नक़्श ना दिल में होता है, ना फ़ितरत के सहीफ़ा में जब तक किसी पण्डित, पांधे या पादरी ने याद रखा उनका कोई वजूद मुस्लिम रहा। कुछ समय बाद ग़लत शब्द की तरह मिट गया।

क़ुरआन शिक्षा की गवाही क़ुदरत के क़ानून की ज़बान से अदा होती है

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

اِنَّهٗ لَقُرْاٰنٌ كَرِیْمٌ۔ فِیْ كِتٰبٍ مَّكْنُوْنٍ۔ لَّا یَمَسُّهٗۤ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ

(अलवाक़िया :78 से 80) बल्कि यह सारा सहीफ़ा क़ुदरत के मज़बूत संदूक़ में महफ़ूज़ है। क्या मतलब कि यह क़ुरआन करीम एक छिपी हुई किताब में है। इस का वजूद काग़ज़ों तक ही सीमित नहीं बल्कि वह एक छिपी हुई किताब में है जिसको सहीफ़ा फ़ितरत कहते हैं अर्थात क़ुरआन की सारी शिक्षा की गवाही क़ानून क़ुदरत के कण-कण की ज़बान से अदा होती है। इस की शिक्षा और इस की बरकतें कथा कहानी नहीं जो मिट जाएं।

इलहाम की ज़रूरत

हर एक आदमी चूंकि अक़्ल से यक़ीन के स्तर पर नहीं पहुंच सकता इसलिए इलहाम की ज़रूरत पड़ती है जो अन्धेरे में अक़्ल के लिए एक रोशन चिराग़ हो कर मदद देता है और यही वजह है कि बड़े बड़े फिलास्फर भी केवल अक़्ल पर भरोसा कर के वास्तविक ख़ुदा को ना पा सके। अत: अफ़लातून जैसा फिलास्फर भी मरते वक़्त कहने लगा कि मैं डरता हूँ। एक बुत पर मेरे लिए एक मुर्ग़ा ज़िब्ह करो। इस से बढ़कर और क्या बात होगी। अफ़लातून की फ़िलास्फ़ी, उस की अक्ल और ज्ञान उस को वह सच्चा सन्तुष्ट और इतमीनान नहीं दे सकी जो मोमिनों को प्राप्त है। यह ख़ूब याद रखो कि

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का अमरीका का सफर, अक्तूबर 2018 ई (भाग-1)

अमरीका में सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमेनीन ख़लीफतुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का चौथी बार दौरा

मस्जिद बैतुल रहमान (वाशिंगटन)में पधारना ,जमाअत के लोगों का अपने प्यारे आक़ा का स्वागत

ऐम.टी.ए अर्थ स्टेशन (ऐम.टी.अटेली पोर्ट)की नई इमारत का उद्घाटन,मस्जिद बैतुल रहमान का मुआइना

फ़िलाडलफ़िया में पधारना, मस्जिद बैतुल आफ़ियत (फ़िलाडलफ़िया) का मुआइना, फ़ैमिली मुलाक़ातें, तक़रीब आमीन का आयोजन

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

15 अक्तूबर 2018 ई (दिनांक सोमवार)

आज का दिन जमाअत अहमदिया अमरीका की तारीख़ में एक बहुत महत्व का और मुबारक दिन है। हज़रत अमीरुल मोमेनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने अमरीका के लिए अपना चौथा सफ़र फ़रमाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने जून 2008 ई में अमरीका का पहला दौरा फ़रमाया था जो अमरीका के पूर्वी हिस्सा की तरफ़ था। इस सफ़र में हुज़ूर अनवर ने वाशिंगटन में निवास फ़रमाया और जलसा सालाना के लिए Harrisburg के इलाक़ा में तशरीफ़ ले गए थे।

फिर 16 जून से 3 जुलाई 2012 ई को हुज़ूर अनवर ने अमरीका का दूसरा दौरा फ़रमाया था। यह दौरा भी अमरीका के पूर्वी इलाक़ा में था। इस सफ़र का आरम्भ शिकागो से हुआ था। शिकागो के अतिरिक्त ज़ीआन, कोलंबस, डीटोन, पिट्सबर्ग, वाशिंगटन डी.सी, हैरिस बर्ग,वर्जीनिया और बॉल्टीमोर जमाअतों में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ तशरीफ़ ले गए और ये सब जमाअतें अपने प्यारे आक़ा के बरकतों वाले वजूद से फ़ैज़याब हुईं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का तीसरा सफ़र अमरीका के पश्चिमी हिस्सा में आबाद जमाअतों और रियासत कैलीफोर्निया के शहर लास एंजलीज़ का था। हुज़ूर अनवर का यह सफ़र 4 मई से 15 मई 2013 ई के अरसा पर आधारित था। हुज़ूर अनवर के इस सफ़र में वैस्ट कोस्ट और साऊथ वैस्ट की सारी जमाअतें हुज़ूर अनवर के बरकतों वाले वजूद से फ़ैज़याब हुईं।

अब यह जो था सफ़र जिसका आरम्भ वाशिंगटन से हुआ है इस दौरा में फ़िलाडलफ़िया, बाल्टी मोरावर साऊथ वर्जीनिया की मस्जिद के उद्घाटन का प्रोग्राम है। इस दौरा में जमाअत हीवसटन में भी कुछ प्रोग्राम शामिल हैं और फिर कुछ दिन के लिए साऊथ अमरीका के एक देश गवाइटे माला का दौरा भी शामिल है।

मस्जिद फ़ज़ल से अमरीका के लिए रवानगी

15 अक्तूबर दिनांक सोमवार 2018 ई दोपहर 2 बजकर 55 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह से बाहर तशरीफ़ लाए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला को विदा कहने के लिए जमाअत के लोग मर्द तथा औरत बड़ी संख्या में मस्जिद के बाहरी सेहन में जमा थे। हुज़ूर अनवर ने सामूहिक दुआ करवाई और अपना हाथ बुलंद करके सब को अस्सलामो अलैकुम कहा और एयरपोर्ट के लिए रवानगी हुई। लगभग तीन बज कर चालीस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला की हीथ्रो एयरपोर्ट तशरीफ़ आवरी हुई। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ एक ख़ास प्रोटोकोल प्रबंध के तहत एयरपोर्ट के एक स्पेशल लाओनज में तशरीफ़ ले आए और इसी जगह इमीग्रेशन का प्रॉसॅस हुआ।

एयरपोर्ट पर हुज़ूर अनवर को विदा कहने के लिए आदरणीय रफ़ीक़ अहमद हयात साहिब अमीर जमाअत अहमदिया यू.के, आदरणीय मुबारक अहमद ज़फ़र साहिब ऐडीशनल वकीलुल माल लंदन और आदरणीय मेजर महमूद अहमद साहिब अफ़्सर हिफ़ाज़त ख़ास क़ाफ़िला के साथ आए थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने दया करते हुए इन लोगों को मुलाक़ात से नवाज़ा।

5 बजकर 20 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ जहाज़ पर सवार हुए। ब्रिटिश एयरवेज़ की परवाज़ BA 293 पाँच बजकर 45 मिनट पर हीथ्रो लंदन एयरपोर्ट से वाशिंगटन अमरीका के लिए रवाना हुई।

लगभग आठ घंटे की निरन्तर उड़ान के बाद वाशिंगटन अमरीका के स्थानीय वक़्त के अनुसार आठ बजकर पैंतालीस मिनट पर जहाज़ वाशिंगटन के Dulles एयरपोर्ट पर उतरा। वाशिंगटन का वक़्त लंदन (यू.के) के वक़्त से पाँच घंटे पीछे है।

जहाज़ के दरवाज़ा पर अमीर जमाअत अमरीका आदरणीय साहिबज़ादा मिर्ज़ा मग़फ़ूर अहमद साहिब, नायब अमीर अमरीका आदरणीय मुनइम नईम साहिब और स्टेट डिपार्टमैंट की एक ऑफीसर ने विशेष प्रोटोकोल प्रबंध के तहत हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला का स्वागत किया।

इस के बाद एक स्पेशल Mobile Lounge (बस) के द्वारा हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला को स्टेट डिपार्टमैंट के प्रबंध के तहत एक स्पेशल लाओनज में लाया गया। इमीग्रेशन की कार्रवाई एक ख़ास प्रबंध के तहत इसी लाओनज में हुई। स्टेट डिपार्टमैंट की ऑफीसर ने अपनी निगरानी में ये सारे इंतिज़ामात करवाए।

प्रोफ़ैशनल सर्विसिज़ मैनिजमंट के एक सीनीयर ऑफीसर भी लाओनज में आए और हुज़ूर अनवर को ख़ुश-आमदीद कहा। हुज़ूर अनवर ने इन लोगों का शुक्रिया अदा किया और दया करते हुए उनसे गुफ़्तगु फ़रमाई।

एयरपोर्ट पर सामान के हुसूल और क्लीयरैंस के हवाला से जिन ऑफीसरज़ ने काम किया वे भी हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात के लिए लाओनज में आए। इन सभी लोगों ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया।

इमीग्रेशन की कार्रवाई पूर्ण होने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला को इस ख़ास दरवाज़ा के द्वारा एयरपोर्ट से बाहर लाया गया जो सिर्फ विशेष एहमीयत के मेहमानों और Dignitaries के लिए निर्धारित है। इस दरवाज़ा के साथ ही हुज़ूर अनवर की गाड़ी खड़ी की गई थी। एयरपोर्ट सैक्योरिटी ने विशेष गेट खोल कर पूरे सम्मान के साथ हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला को यहां से रवाना किया।

एयरपोर्ट से रवाना हो कर रात 10 बज कर 40 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला की मस्जिद बैयतुर्रहमान तशरीफ़ लाए।

मस्जिद बैयतुर्रहमान और इस के इर्दगिर्द के खुले सेहन को बिजली के रंग बिरंगी रौशनी से सजाया गया था। ये सारा इलाक़ा रंग-बिरंगी रौशनियों से रोशन था। अपने प्यारे आक़ा के स्वागत और हुज़ूर अनवर के चेहरा मुबारक की एक झलक देखने के लिए अमरीका के इस क्षेत्र के दूरदराज़ शहरों और विभिन्न स्टेटस में आबाद हुज़ूर अनवर के उश्शाक हज़ारों की संख्या में दोपहर के बाद से ही मस्जिद बैयतुर्रहमान पहुंचना शुरू हो गए थे। मर्दो औरत और बच्चों और बूढ़ों का एक हुजूम था जो अपने प्यारे और महबूब आक़ा के नूर वाले चेहरा पर अपनी नज़र डालने के लिए बेताब था। वाशिंगटन और इस के इर्दगिर्द की जमाअतों के इलावा ये उश्शाक न्यूयार्क, Connecticut, नॉर्थ कैरोलीना, शिकागो,ज़ीआन, मिलवाकी और Oshkosh जमाअतों से आए थे और फिर मियामी,डैलस , Minneapolis, हीवसटन , बे प्वाईंट, सयाटल, सीलीकोन वैली और लास एंजलज़ से बड़े लंबे और दूर के सफ़र करके पहुंचे थे। अक्सर जमाअतों से तो पाँच से छ: घंटे का सफ़र कार के द्वारा तय करके पहुंचे थे जबकि शिकागो से आने वाले

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि वह (यूनुस पुत्र मती)मेरा भाई था क्योंकि वह भी अल्लाह का नबी था और में भी अल्लाह का नबी हूँ।

जिन औरतों का भी बदरी सहाबा रज़ि के साथ सम्बन्ध है इन औरतों का वर्णन भी कुछ सहाबा रज़ि के वर्णन में आ जाता है

ताकि इन औरतों के बुलंद मुक़ाम का भी हमें पता लगता रहे। इसलिए मैं यह वर्णन साथ साथ करता रहता हूँ।

नबी अकरम के आज़ाद किए हुए ग़ुलाम, इख़लास तथा वफ़ा की साक्षात मूर्ति बदरी सहाबी रसूल हज़रत ज़ैद बिन हारिसा और उनकी पत्नी हज़रत उम्मे ऐमन रज़ी अलल्लाआ अन्हुमा की मुबारक सीरत का दिल को भाने वाला वर्णन

उम्मुल मोमनीन हज़रत ज़ैनब बिन्त (पुत्री) जह्श रज़ी अल्लाह अनहा के निकाह का विस्तृत वर्णन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 14 जून 2019 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

हज़रत ज़ैद बिन हारसह रज़ि की घटनाओं में पिछले ख़ुत्बे में वर्णन कर रहा था और इस अन्तर्गत में ताइफ के सफ़र की घटना का भी वर्णन हुआ था। वह भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शामिल थे। ताइफ के इस सफ़र की कुछ अधिक वर्णन जो सीरत ख़ातमुन्निबय्यीन में हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने लिखी है, वह भी इस के हवाले से वर्णन करता हूँ।

शुअब अबी तालिब से निकलने के बाद आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ताइफ का सफ़र किया था। जब यह घेराव उठ गया और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपनी हरकात अर्थात मूवमैंट (movement) में कुछ हद तक आज़ादी प्राप्त हुई तो आप (स) ने इरादा फ़रमाया कि ताइफ में जा कर वहां के लोगों को इस्लाम की दावत दें। ताइफ एक मशहूर स्थान है जो मक्का से दक्षिण पूर्व की तरफ़ चालीस मील की दूरी पर स्थित है और इस ज़माना में क़बीला बनू सक़ीफ़ से आबाद था। काअबा की विशेषताओं को अगर अलग रखकर देखा जाए तो शहर के लिहाज़ से ताइफ मानो मक्का का बारबर था और इस में बड़े बड़े अमीर धनाढ्य और दौलतमंद लोग आबाद थे और ताइफ की इस एहमीयत का ख़ुद मक्का वालों को भी इक़रार था। अत: यह मक्का वालों का ही कथन है जिसका अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम में भी वर्णन फ़रमाया है कि

لَوْلَا نُزِّلَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ عَلٰى رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيْمٍ

(अज़्ज़ुख़रफ़:32)

अर्थात अगर यह क़ुरआन ख़ुदा की तरफ़ से है तो मक्का या ताइफ के किसी बड़े आदमी पर क्यों नाज़िल ना किया गया। अत: शवाल 10 नबवी में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ताइफ पधारे। कुछ रिवायतों में अकेले तशरीफ़ ले गए, कुछ में यह है कि ज़ैद बिन हारसह रज़ि भी साथ थे। वहां पहुंच कर आप (स) ने दस दिन निवास किया और शहर के बहुत से अमीरों से एक के बाद दूसरे से मुलाक़ात की मगर इस शहर की क़िस्मत में भी मक्का की तरह उस वक़्त इस्लाम लाना मुक़द्दर नहीं था। अत: सब ने इनकार किया बल्कि हंसी उड़ाई। आख़िर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ताइफ के सब से बड़े रईस अब्दे यालेल और हदीस में इब्ने अब्दे यालेल का नाम आता है, इस के पास जाकर इस्लाम की दावत दी मगर उसने भी साफ़ इनकार किया बल्कि उपहास के रंग में कहा कि अगर आप (स) सच्चे हैं तो मुझे आप (स) के साथ गुफ़्तगु की मजाल नहीं और अगर झूटे हैं तो फिर गुफ़्तगु व्यर्थ है। इस का कोई मक़सद नहीं और फिर उस ख़्याल से कि कहीं आप (स) की बातों का शहर के नौजवानों पर असर ना हो जाए आप (स) से कहने लगा कि बेहतर होगा कि आप (स) यहां से चले जाएं क्योंकि यहां कोई शख़्स आप (स) की बात सुनने के लिए तैयार नहीं और इस के बाद इस हतभागे ने शहर के आवारा आदमी आप (स) के पीछे लगा दिए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शहर से निकले तो ये लोग शोर करते हुए आप (स) के पीछे हो लिए और आप (स) पर पत्थर बरसाने शुरू किए जिस से आप (स) का सारा शरीर ख़ून से भीग गया और जो पहली रिवायत है इस में यह भी था कि हज़रत ज़ैद बिन हारसह रज़ि साथ थे, उनके सर पर भी पत्थर लगे जब वह पत्थरों को रोकते थे। बहरहाल बराबर तीन मील तक ये लोग आप (स) के साथ साथ गालियां देते और पत्थर बरसाते चले आए।

ताइफ से तीन मील के फ़ासले पर मक्का के रईस उतबा बिन रबीया का एक बाग़ था। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस में आकर पनाह ली और ज़ालिम लोग थक कर वापस लौट गए। यहां एक छाया में खड़े हो कर आप (स) ने अल्लाह तआला के हुज़ूर यूं दुआ की कही

اَللّٰهُمَّ اِلَيْكَ اَشْكُوْ ضُعْفَ قُوَّتِيْ وَ قِلَّةَ حِيْلَتِيْ وَهَوَانِيْ عَلَى النَّاسِ۔ اَللّٰهُمَّ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ اَنْتَ رَبُّ الْمُسْتَضْعَفِيْنَ وَاَنْتَ رَبِّيْ

हे मेरे रब ! मैं अपनी क़ुव्वत की कंज़ोरी और तदबीर की कमी और लोगों के मुक़ाबले में अपनी विवशता की शिकायत तेरे ही पास करता हूँ। हे मेरे ख़ुदा! तू सबसे बढ़कर रहम करने वाला है और कमज़ोरों और बेकसों का तू ही निगहबान और मुहाफ़िज़ है। तू ही मेरा परवरदिगार है। मैं तेरे ही मुँह की रोशनी में पनाह का इच्छुक होता हूँ क्योंकि तू ही है जो ज़ुल्मतों को दूर करता और इन्सान को दुनिया तथा आख़िरत के भलाइयों का वारिस बनाता है।

उत्बह तथा शैबह उस वक़्त अपने इस बाग़ में मौजूद थे। जब उन्होंने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस अवस्था में देखा तो दूर तथा नज़दीक की रिश्तेदारी से या क़ौमी एहसास से या ना मालूम किसी और ख़्याल से,बहरहाल अपने ईसाई ग़ुलाम अद्दास नामक के हाथ एक प्लेट में कुछ अंगूर लगा कर आपके पास भिजवाए। आप (स) ने ले लिए और अद्दास से मुख़ातब हो कर फ़रमाया कि तुम कहाँ के रहने वाले हो? और किस मज़हब के पाबंद हो? उसने कहा कि मैं नैनवा का हूँ और ईसाई मज़हब का मानने वाला हूँ। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क्या वही नैनवा जो ख़ुदा के सालिह बंदे यूनुस बिन मती का निवास था? अद्दास ने कहा। उसने फिर आपसे पूछा कि हाँ मगर आपको यूनुस का हाल कैसे मालूम हुआ? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि वह मेरा भाई था क्योंकि वह भी अल्लाह का नबी था और मैं भी अल्लाह का नबी हूँ। फिर आप (स) ने उसे इस्लाम की तब्लीग़ फ़रमाई जिसका उस पर असर हुआ और उसने आगे बढ़कर जोश तथा इख़लास में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हाथ चूम लिए। इस दृशय को दूर से खड़े खड़े उत्बा और शैबह भी देख रहे थे। अत: जब

अद्दास उनके पास वापस गया तो उन्होंने कहा अद्दास तुझे क्या हुआ था कि इस शख़्स के हाथ चूमने लगा। ये शख़्स तो तेरे धर्म को ख़राब कर देगा हालाँकि तेरा धर्म उस के धर्म से बेहतर है।

इस के बाद फिर थोड़ी देर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस बाग़ में आराम फ़रमाया और फिर वहां से रवाना हुए और नख़ला में पहुंचे जो मक्का से एक मंज़िल की दूरी पर स्थित है और वहां कुछ दिन निवास किया। इस के बाद नख़ला से रवाना हो कर आप (स) हिरा पहाड़ पर आए और चूँकि सफ़र ताइफ की बज़ाहिर नाकामी की वजह से मक्का वालों के ज़्यादा दिलेर हो जाने का अंदेशा था इसलिए यहां से आप (स) ने मुत्इम बिन अदी को कहला भेजा कि मैं मक्का में दाख़िल होना चाहता हूँ। क्या तुम मुझे इस काम में मदद दे सकते हो? मुत्इम पक्का काफ़िर था मगर तबीयत में शराफ़त थी और ऐसे हालात में इन्कार करना अरब के शरीफों की फ़ित्रत के ख़िलाफ़ था कि अगर कोई पनाह मांगे तो इस को पनाह ना दें। बहरहाल अरबों में इस ज़माने में भी, जाहलियत में भी यह विशेषता थी। इसलिए उसने अपने बेटों और रिश्तेदारों को साथ लिया और सब तलवार लेकर काबा के पास खड़े हो गए और आप (स) को कहला भेजा कि आ जाऐं हम आप (स) को पनाह देते हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आए और काबा का तवाफ़ किया और वहां से मुत्इम और इस की औलाद के साथ तलवारों के साया में अपने घर में दाख़िल हो गए। रास्ता में अब्बू जहल ने मुत्इम को इस हालत में देखा तो हैरान हो कर कहने लगा कि क्या तुमने मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सिर्फ पनाह दी है या उस के अधीन हो गए हो? मुत्इम ने कहा। मैं सिर्फ पनाह देने वाला हूँ। अधीन नहीं हूँ। इस पर अबु जहल ने कहा। अच्छा फिर कोई हर्ज नहीं। बहरहाल मुत्इम कुफ़्र की हालत में ही फ़ौत हुआ।

(उद्धिरत सीरत ख़ातमुन्निबिय्यीन लेखक हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम ए पृष्ठ 181 से 183)

यह बहरहाल उस की एक नेकी थी। हज़रत ज़ैद रज़ि जब हिजरत कर के मदीना पहुंचे तो आप रज़ि ने हज़रत कुलसूम बिन हिद्म रज़ि के पास निवास किया जबकि कुछ के अनुसार आप रज़ि हज़रत साद बिन ख़ैसमह रज़ि के पास ठहरे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप रज़ि का भाईचारा हज़रत उसैद बिन हुज़ैर रज़ि से करवाया। कुछ ने लिखा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप रज़ि का भाईचारा हज़रत हमज़ह रज़ि से करवाया। अर्थात कि हज़रत हमज़ा रज़ि को आप रज़ि का भाई बनाया। यही वजह है कि जंग उहद के दिन हज़रत हमज़ा ने लड़ाई के वक़्त हज़रत ज़ैद रज़ि के हक़ में वसीयत फ़रमाई थी।

(अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 3 पृष्ठ 32 ज़ैद अलहब बिन हारिसा प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत)

(अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 3 पृष्ठ 6 हमज़ा बिन अब्द अल-मुतलिब रज़ी अल्लाह अन्हो प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत)

इस बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने सीरत ख़ातमुन्निबय्यीन में और अधिक लिखा है कि

मदीना पहुंचने के कुछ समय बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ज़ैद बिन हारसह रज़ि को कुछ रुपए देकर मक्का रवाना फ़रमाया जो कुछ दिन में आपके और अपने घर वालों को साथ लेकर ख़ैरीयत से मदीना पहुंच गए। उनके साथ अब्दुल्लाह बिन अबी बिक्र, हज़रत अबू बकर रज़ि के घर वालों को भी साथ लेकर मदीना पहुंच गए।

(उद्धरित सीरत ख़ातमुन्निबय्यीन लेखक हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम ए पृष्ठ 269)

हज़रत बरा रज़ी अल्लाह तआला अन्हो से रिवायत है कि जब नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ज़ी क़ादा में उमरा करने का इरादा किया तो मक्का वालों ने इस बात से इनकार किया कि आप (स) को मक्का में दाख़िल होने दें। आख़िर आप (स) ने उनसे इस शर्त पर सुलह की कि आप (स) अगले वर्ष उमरा को आएँगे और यहां मक्का में तीन दिन तक ठहरेंगे। जब सुलह नामा लिखने लगे तो यूं लिखा कि ये वे शर्तें हैं जिस पर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सुलह की। मक्का वाले कहने लगे कि हम इस चीज़ को नहीं मानते। अगर हम जानते कि आप (स) अल्लाह के रसूल हैं तो आप (स) को कभी ना रोकते। कहने लगे हमारे नज़दीक तो आप (स) मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं अल्लाह का रसूल भी हूँ और मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह भी। आप (स) ने हज़रत अली रज़ि से फ़रमाया कि रसूलुल्लाह का लफ़्ज़ यहां से मिटा दो। हज़रत अली रज़ि ने कहा हरगिज़ नहीं। अल्लाह की क़सम! मैं आप (स) के ख़िताब को कभी नहीं मिटाऊंगा अर्थात कि अल्लाह का रसूल। अल्लाह तआला ने आपको जो ख़िताब दिया है इस को मैं नहीं मिटा सकता। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनसे लिखा हुआ काग़ज़ ले लिया। आप अच्छी तरह लिखना नहीं जानते थे। आपने यूं लिखा कि ये वे शर्तें हैं जो मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ने ठहराईं। मक्का में कोई हथियार नहीं लाएँगे सिवाए तलवारों के, जो नयामों में होंगी और मक्का वालों में से किसी को भी साथ नहीं ले जाऐंगे यद्यिप वे उनके साथ जाना चाहे और अपने साथियों में से किसी को भी नहीं रोकेंगे अगर वह मक्का में ठहरना चाहे। बहरहाल इस सन्धि के अनुसार आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अगले साल मक्का में दाख़िल हुए और तीन दिन की मुद्दत ख़त्म हो गई तो क़ुरैश हज़रत अली के पास आए और कहने लगे कि अपने साथी मुहम्मद अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कहो कि अब यहां से चले जाएं क्योंकि निर्धारित समय सीमा गुज़र चुकी है, तीन दिन ठहरने की शर्त थी ,तीन दिन हो गए हैं। अत: नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वहां से रवाना हो गए। हज़रत हमज़ह रज़ि की बेटी उमारह ,एक रिवायत में उनका नाम उमामह और दूसरी रिवायत में अम्तुलल्लाह भी मिलता है ,आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पीछे पीछे आईं कि हे चाचा! हे चाचा! हज़रत अली रज़ि ने जा कर उसे ले लिया, पकड़ लिया। इस का हाथ पकड़ा और हज़रत फ़ातिमा अलैहिस्सलाम से कहा कि आप रज़ि चाचा की बेटी को ले लें। उन्होंने इस को सवार कर लिया। अब हज़रत अली रज़ि ,हज़रत ज़ैद रज़ि, और हज़रत जाफ़र रज़ि हज़रत हमज़ह रज़ि की लड़की के बारे में झगड़ने लगे। हज़रत अली रज़ि कहने लगे कि मैं ने तो इस को लिया है और मेरे चाचा की बेटी है और हज़रत जाफ़र ने कहा कि मेरे चाचा की बेटी है और इस की ख़ाला अस्मा बिन्त (पुत्री) उमैस मेरी बीवी है और हज़रत ज़ैद रज़ि ने कहा कि मेरे भाई की बेटी है जैसा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भाईचारा क़ायम किया था। फिर नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस के बारे में फ़ैसला किया कि वह अपनी ख़ाला के पास रहीं अर्थात हज़रत जाफ़र जो थे उनके पास रहे। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ख़ाला माँ के स्थान पर होती है और हज़रत अली रज़ि से कहा तुम मेरे हो और मैं तुम्हारा हूँ और हज़रत जाफ़र से कहा तुम सूरत और सीरत में मुझसे मिलते जुलते हो और हज़रत ज़ैद से कहा कि तुम हमारे भाई हो और दोस्त हो। हज़रत अली रज़ि ने कहा कि आप हमज़ह रज़ि की बेटी से शादी नहीं कर लेते? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि वह मेरे रज़ाई भाई की बेटी है। मेरे दूध भाई हैं और मैं इस बच्ची का चाचा हूँ। यह रिवायत बुख़ारी में है और सीरतुल हलबिया में भी है।

(सही अल-बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी हदीस 4251)

(अस्सीरतुल हलिबया जिल्द 3 पृष्ठ 95 किताब अल्मुग़ाज़ी प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2002 ई)

हज़रत ज़ैद बिन हारसह रज़ि ने हज़रत उम्मे ऐमन रज़ि से शादी की थी। हज़रत उम्मे ऐमन रज़ि का नाम बरकत था और आप अपने बेटे ऐमन रज़ि के कारण से उम्मे ऐमन की कुनिय्यत से मशहूर थीं। आप रज़ि हब्शा की रहने वाली थीं। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पिता हज़रत अब्दुल्लाह की दासी थीं। उनकी वफ़ात के बाद हज़रत आमना के पास रहने लगीं। जब रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उम्र छ: साल की थी तो आप (स) की माता जी आप (स) को साथ लेकर अपने मैके से मिलने मदीना गईं तो उस वक़्त हज़रत उम्मे ऐमन रज़ि बतौर ख़ादिमा साथ थीं,छोटी भी होंगी। मदीना से वापसी पर जब अब्वा नामक स्थान पर जो कि मस्जिद नब्वी से पाँच मील की दूरी पर है पहुंची तो हज़रत आमना की वफ़ात हो गई । हज़रत उम्मे ऐमन रज़ि आं हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इन्ही दो ऊंटों पर मक्का वापस ले आएं जिन पर वह मक्का से गई थीं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दावा नुबुव्वत से पहले मक्का में हज़रत उम्मे ऐमन रज़ि की शादी उबैद बिन ज़ैद से हुई जो ख़ुद एक हब्शी ग़ुलाम थे। उनके हाँ बेटा पैदा हुआ जिसका नाम ऐमन था। हज़रत ऐमन रज़ि ने जंग हुनैन में शहादत का मुक़ाम हासिल किया। हज़रत उम्मे ऐमन रज़ि के पति की वफ़ात हो गई तो आप रज़ि की शादी हज़रत ज़ैद रज़ि से कर दी गई। एक रिवायत में यह है कि हज़रत उम्मे ऐमन रज़ि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से निहायत मेहरबानी से पेश आतीं और आप (स) का ख़्याल रखती थीं। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो जन्नत वाली औरत से शादी कर के ख़ुश होना चाहता है तो उसे चाहिए कि वह उम्मे ऐमन रज़ि से शादी कर ले। अत: इस पर

हज़रत ज़ैद बिन हारसह रज़ि ने उनसे शादी की जिस से हज़रत उसामह रज़ि पैदा हुए। हज़रत उम्मे ऐमन रज़ि ने मुस्लमानों के साथ हब्शा की तरफ़ हिजरत की थी। वहां से हिजरत के बाद मदीना वापस आएं और जंग-ए-उहद में शिरकत की। इस मौक़े पर आप रज़ि लोगों को पानी पिलातें और ज़ख़मियों की तीमारदारी करती थीं। उनको जंग ख़ैबर में भी शिरकत की तौफ़ीक़ मिली। 23 हिज्री में जब हज़रत उमर रज़ि ने शहादत पाई तो हज़रत उम्मे ऐमन रज़ि बहुत रोईं। लोगों ने पूछा क्यों रोती हो तो उन्होंने जवाब दिया कि हज़रत उमर रज़ि की शहादत से इस्लाम कमज़ोर पड़ गया है। हज़रत उम्मे ऐमन रज़ि की वफ़ात हज़रत उसमान रज़ि के दौर ख़िलाफ़त के आरम्भ में हुई।

(अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 8 पृष्ठ 179 से 181 उम्मे ऐमन , जिल्द 1 पृष्ठ 93-94 वर्णन वफ़ात आमनह उम्मे रसूल प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई) (अस्सीरतुल हलिबया जिल्द अव्वल पृष्ठ 77 बाब वफ़ात वालद रसूलुल्लाह , दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2002 ई) (असदुल ग़ाबह जिल्द 7 पृष्ठ 291 उम्मे एमन प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)(मुअज्जमुल बुल्दान जिल्द अवूवल पृष्ठ 102 अब्वा प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत)

हज़रत ज़ैद रज़ि की हज़रत उम्मे ऐमन रज़ि से शादी के बारे में विभिन्न हवालों से हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने जो तहरीर किया है इस का सार यह है, जो आप रज़ि की लेखनी में है कि उम्मे ऐमन रज़ि वही हैं जो आप (स) के पिता की वफ़ात पर एक दासी की हैसियत में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को विरसा में पहुंची थीं। बड़े हो कर आप (स) ने उन्हें आज़ाद कर दिया था और उनके साथ बहुत एहसान का सुलूक फ़रमाते थे। बाद में उम्मे ऐमन रज़ि की शादी आप (स) के आज़ाद किए हुए ग़ुलाम ज़ैद बिन हारसह रज़ि के साथ हो गई और उनके गर्भ से उसामा बिन ज़ैद रज़ि पैदा हुए।

(उद्धरित सीरत ख़ातमुन्निबय्यीन लेखक हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम ए पृष्ठ 99)

जिन्हें अलुहिब्बु इबुनु अलुहिब्ब अर्थात महबूब का प्यारा बेटा कहा जाता था।

(अल्इस्तेयाब फ़ी मारफतुस्सहाबा जिल्द 1 पृष्ठ 75 उसामा बिन ज़ैद प्रकाशन दार अलजील बेरूत 1992 ई)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत उम्मे ऐमन रज़ि को देखकर फ़रमाया करते थे कि यह अुम्मी अर्थात हे मेरी माता। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत उम्म ऐमन रज़ि की तरफ़ देखते तो फ़रमाते। هٰذِهٖ بَقِيَّةُ اَهْلِ بَيْتِيْ यह मेरे अहल बैत में से बाक़ी बची हैं। एक दूसरी रिवायत के अनुसार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह भी फ़रमाते थे कि أُمُّ أَيْمَنَ أُمِّيْ بَعْدَ أُمِّيْ अर्थात उम्मे ऐमन रज़ि मेरी वास्तविक माता के बाद मेरी माता है और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनके घर में भी उनकी मुलाक़ात के लिए तशरीफ़ ले जाया करते थे।

(तारीख़ अत्तिबरी जिल्द 13 पृष्ठ 375 अल्मुनतख़ब फ़ी किताब अलमुज़ील वज़ज़ील.. दारुल फ़िक्र बैरूत 2002ई) (असदुल ग़ाब जिल्द 7 पृष्ठ 291, उम्मे एमन मोलात रसूलुल्लाह , दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2008 ई)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ी अल्लाह तआला अन्हो से रिवायत है कि जब मुहाजिर मक्का से मदीना आए और उनके हाथ में कुछ भी ना था और अन्सार ज़मीन और जायदाद वाले थे तो अन्सार ने उनसे मुआहिदा किया कि वह उनको अपने बाग़ों का मेवा हर साल दिया करेंगे लेकिन उन में काम काज वह ख़ुद करेंगे। बाग़ का फल देंगे, आय देंगे लेकिन जो बाग़ की मेहनत मज़दूरी है, इस को सँभालना है वह ख़ुद क्या करेंगे। मुहाजरीन को नहीं करने देंगे। हज़रत अनस रज़ि की माता हज़रत उम्मे सुलैम थीं जो हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी तलहा रज़ि की भी माता थीं। हज़रत अनस की माँ ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कुछ खजूर के वृक्ष दिए हुए थे। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ये वृक्ष अपनी खिलाई हज़रत उम्मे ऐमन रज़ि को दे दिए जो हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि की माता थीं। इब्ने शहाब कहते थे कि मुझे हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि ने बताया कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब ख़ैबर वालों की लड़ाई से फ़ारिग़ हुए और मदीना को लौट गए तो मुहाजिरीन ने अन्सार के वह तोहफे अर्थात वह फलदार वृक्ष जो उन्होंने उनको अपने बाग़ों से दिए हुए थे, वापस कर दिए। अब उनको अपनी भी कुछ दौलत जायदाद इत्यादि मिल गई थी। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी हज़रत अनस रज़ि की माता को उनकी खजूरें वापस कर दें और उनकी जगह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उम्मे ऐमन रज़ि को अपने बाग़ में से कुछ वृक्ष दे दिए।

(सही अल-बुख़ारी हदीस 2630)

बुख़ारी की एक दूसरी रिवायत में इस का और विस्तार यूं है कि हज़रत अनस रज़ि से रिवायत है कि कोई सहाबी नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए ख़जूरों के कुछ वृक्ष विशेष कर दिया करता था। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़ुरैज़ा और नज़ीर फ़तह किए तो आप (स) को उनकी ज़रूरत ना रही। तो वह कहते हैं कि मेरे घर वालों ने मुझे कहा कि मैं नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास जाऊं और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से वह वृक्ष जो उन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को दिए थे या उनमें से कुछ वृक्ष वापस करने के लिए कहूं क्योंकि अब आप (स) को ज़रूरत नहीं रही। हज़रत अनस रज़ि से यह रिवायत है। तो कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ये वृक्ष क्योंकि हज़रत उम्मे ऐमन रज़ि को दिए हुए थे तो ये सुनकर हज़रत उम्मे ऐमन रज़ि आएं और मेरी गर्दन में कपड़ा डाला और बोलीं कि मैं हरगिज़ नहीं दूँगी। कसम है उस हस्ती की जिसके सिवा कोई उपास्य नहीं! कि ये वृक्ष तुम्हें कभी नहीं मिलेंगे जबकि ये आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुझे दे चुके हैं या कुछ ऐसा ही कहा। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उम्मे ऐमन रज़ि से फ़रमाया कि कोई बात नहीं, वापस कर दो। तुम्हें इतने ही और दूँगा। जितने तुम्हें वृक्ष दिए हुए हैं उतने ही दूसरी जगह से और दे दूँगा। लेकिन वह कहती थीं कि अल्लाह की क़सम! हरगिज़ नहीं। हज़रत अनस कहते हैं कि मेरा ख़्याल है कि आख़िर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनको, हज़रत उम्मे ऐमन रज़ि को इस से दस गुना दिए या कुछ ऐसे ही शब्द थे जो कहे। (सही अल-बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी हदीस 4120)कि मैं तुम्हें दस गुना दे दूँगा। इस के बाद ये वृक्ष वापस किए गए।

एक रिवायत है कि हज़रत उम्मे ऐमन रज़ि को मदीना की तरफ़ पैदल हिजरत करते वक़्त बहुत अधिक प्यास लगी, बड़ी बुज़ुर्ग औरत थीं, अल्लाह तआला से उनका बड़ा ख़ास सम्बन्ध था। इस वक़्त आप रज़ि के पास पानी भी नहीं था और गर्मी भी बहुत अधिक थी। उन्होंने अपने सिर के ऊपर किसी चीज़ की आवाज़ सुनी तो क्या देखती हैं कि उन पर आसमान से डोल की मानिंद एक चीज़ झुक आई थी जिससे पानी के सफ़ैद बिन्दु गिर रहे थे। उन्होंने इस में से पानी पिया यहां तक कि तृप्त हो गईं। वह कहा करती थीं कि इस के बाद से मुझे कभी प्यास और तृष्णा का एहसास नहीं हुआ, तकलीफ़ नहीं हुई और कभी रोज़े की अवस्था में भी प्यास महसूस होती तो तब भी मैं प्यासी नहीं रहती थी।

बदरी सहाबा के साथ जिन औरतों का भी सम्बन्ध है इन औरतों का वर्णन भी कुछ सहाबा के वर्णन में आ जाता है ताकि इन औरतों के उच्च मुक़ाम का भी हमें पता लगता रहे इसलिए में ये वर्णन साथ साथ करता रहता हूँ।

हज़रत उम्मे ऐमन रज़ि की ज़बान में कुछ लुक्नत थी जब वह किसी के पास जातीं तो سَلَامُ اللهِ عَلَيْكُمْ की बजाय, (पहले ये سَلَامُ اللهِ عَلَيْكُمْ कहने का रिवाज था,) लुक्नत की वजह से سَلَامٌ لَا عَلَيْكُمْ कहती थीं। अत: रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें سَلَامُ اللهِ عَلَيْكُمْ की बजाय سَلَامٌ عَلَيْكُمْ या اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ कहने की इजाज़त दी और अब वही रिवाज है।

हज़रत आयशा रज़ि फ़रमाती हैं कि एक दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पानी पिया तो उस वक़्त हज़रत उम्मे ऐमन रज़ि आप (स) के पास थीं। उन्होंने कहा हे रसूलुल्लाह! मुझे भी पानी पिलाऐं। हज़रत आयशा रज़ि कहती हैं इस पर मैं ने इन से कहा कि क्या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तुम इस तरह कह रही हो कि तुम्हें पानी पिलाऐं? इस पर उन्होंने कहा कि क्या मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़्यादा ख़िदमत नहीं की। इस पर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तू ने सच कहा है। फिर आप (स) ने उन्हें पानी पिलाया।

(अस्सीरतुल हलबिया जिल्द अव्वल पृष्ठ 77-78 बाब वालेदतु रसूलुल्लाह , दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2002 ई)

हज़रत अनस रज़ि वर्णन करते हैं कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वफ़ात पा गए तो हज़रत उम्मे ऐमन रज़ि रोती रहीं। उनसे पूछा गया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए आप रज़ि क्यों रो रही हैं? तो उन्होंने कहा कि मैं यह तो जानती थी कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी ज़रूर वफ़ात पा जाऐंगे लेकिन में तो इसलिए रोती हूँ कि वह्य हम से उठा ली गई।

(असदुल ग़ाब जिल्द 7 पृष्ठ 291, उम्मे एमन मोला रसूलुल्लाह , दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2008 ई)

अर्थात आप (स) की वफ़ात का एक ग़म है वह तो अलग रहा लेकिन इस के साथ जो नया नया अल्लाह तआला का कलाम नाज़िल होता था, वह्य होती थी वह सिलसिला अब बंद हो गया है। इस वजह से मुझे रोना आ रहा है।

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि वर्णन करते हैं कि एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद हज़रत अबू बकर रज़ि ने हज़रत उमर रज़ि से कहा कि हमारे साथ हज़रत उम्मे ऐमन रज़ि के हाँ चलो कि उनसे मिलें जिस तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनसे मिला करते थे। जब हम उनके पास पहुंचे तो वह रो पढ़ें। इस पर इन दोनों ने उन्हें कहा कि आप रज़ि क्यों रोती हैं? जो कुछ अल्लाह के पास है वह उस के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि के लिए बेहतर है। हज़रत उम्मे ऐमन रज़ि ने कहा कि मैं इसलिए नहीं रोती कि जानती नहीं हूँ कि जो अल्लाह के पास है वह उस के रसूल के लिए बेहतर है। उनका भी नेकी में बड़ा मुक़ाम था जैसा कि मैंने कहा। कहती हैं कि मैं तो इसलिए रोती हूँ कि अब आसमान से वह्य आना बंद हो गई। उन्होंने इन दोनों को भी रुला दिया और वह दोनों भी रोने लगे।

(सही मुस्लिम किताबुल फ़ज़ाइल हदीस 2454)

हज़रत उसामह रज़ि और हज़रत ज़ैद रज़ि की रंगत का बड़ा फ़र्क़ था। माँ क्योंकि हब्शा की रहने वाली थीं, अफ़्रीकन थीं। और ज़ैद दूसरी जगह के रहने वाले थे तो इस वजह से बाप बेटे में फ़र्क़ था। माँ की तरफ़ उनका रंग ज़्यादा था जिसकी वजह से कुछ लोग हज़रत उसामह रज़ि की नसल पर एतराज़ करते थे। ये कहा करते थे कि हज़रत ज़ैद रज़ि के बेटे नहीं हैं या एतराज़ बराए एतराज़ होते थे। मुनाफ़क़ीन भी एतराज़ किया करते थे तो हज़रत आयशह रज़ि वर्णन करती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक दिन मेरे पास आए तो आप (स) बड़े ख़ुश थे। आप (स) ने फ़रमाया कि हे आयशह रज़ि! अभी मुजज़्ज़िज़ मुदलजी मेरे पास आया था। उसने उसामा बिन ज़ैद रज़ि और ज़ैद बिन हारसह रज़ि को इस हालत में देखा कि इन दोनों पर एक चादर थी। गर्मी की वजह से या बारिश की वजह से बहरहाल किसी वजह से एक चादर दोनों ने ली हुई थी और मुँह ढके हुए थे, जिस से उन्होंने अपने सिरों को ढाँपा हुआ था और चेहरे भी नज़र नहीं आ रहे थे और इन दोनों के पैर बाहर निकले हुए थे। सिर्फ पैर बाहर निकले हुए थे तो उसने कहा कि यक़ीनन ये पैर एक दूसरे में से हैं अर्थात कि दोनों के जो पांव हैं बहुत समानता रखते हैं। तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बड़े ख़ुश थे कि उसामह रज़ि पर जो एतराज़ किया जाता था आज वह एतराज़ दूर हो गया है। क्योंकि ये एक माहिर चिन्ह देखने वाले हैं और यह देखने वाले चिन्ह देखने वाले जो दुनियादार आदमी होते हैं इस की यह भी गवाही है।

(सही अल-बुख़ारी किताबुल फ़राइज़ हदीस 6771) (फ़तहुल बारी शरह सही अल-बुख़ारी किताबुल फ़राइज़ हदीस 6771 जिल्द 12 पृष्ठ 58 प्रकाशन दार अर्रयान अत्तुरास अलक़ाहिरा 1987 ई)

और अरब के माहौल में यह एक दृढ़ बात हुआ करती थी। वैसे तो कोई नहीं लेकिन यह जो दुनियादारों का मुँह-बंद कराने के लिए, मुनाफ़क़ीन का मुँह-बंद कराने के लिए एक सबूत मिला जिस पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बहुत ख़ुश थे।

हज़रत ज़ैद रज़ि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आज़ाद किए हुए ग़ुलाम और मुँह बोले बेटे भी थे। आप (स) ने हज़रत ज़ैद रज़ि की एक शादी हज़रत ज़ैनब बिन्त (पुत्री) जहश रज़ि से करवाई थी लेकिन ये शादी अधिक समय तक नहीं चली और हज़रत ज़ैद रज़ि ने हज़रत ज़ैनब रज़ि को तलाक़ दे दी। यह शादी एक साल या इस से कुछ अधिक समय तक रही। इस के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ुद हज़रत ज़ैनब बिन्त (पुत्री) जहश रज़ि से शादी की।

(अस्सीरतुन नवबिय्या , अर्ज़ वक़ाऐ तहलील एहदास दक़तूर अली मुहम्मद सलाबी। पृष्ठ 628-629। अलमबहसुल अव्वल: ज़ौज: अन्नबी ब ज़ीनब बिन्त (पुत्री) जहश, दार अलमारफ़: बेरूत 2007 ई)

विभिन्न उद्धरणों को इकट्ठा कर के सीरत ख़ात्मुल अंबिया में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने जो लिखा है इस का विस्तार यूं है कि

हिजरत के पांचवें साल में जंग बनी मुस्तलक़ से कुछ समय पहले जो शाबान 5 हिज्री में घटना हुई आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ज़ैनब बिन्त (पुत्री) जहश रज़ि से शादी फ़रमाई। हज़रत ज़ीनब रज़ि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की फूफी अमीमा बिन्त (पुत्री) अब्दुल मुतलिब की साहबज़ादी थीं और बावजूद निहायत दर्जा नेक और मुत्तक़ी होने के उनकी तबीयत में अपने ख़ानदान की बड़ाई का एहसास भी कुछ सीमा तक पाया जाता था। इस के मुक़ाबला में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तबीयत इस किस्म के विचारों से बिलकुल पाक थी और यद्यपि आप (स) ख़ानदानी हालात को तमद्दुनी रंग में सम्मान योग्य समझते थे मगर आप (स) के निकट बुज़ुर्गी का वास्तविक स्तर व्यक्तगित ख़ूबी और व्यक्तिगत तक़्वा तथा पवित्रता पर आधारित था। जैसा कि क़ुरआन शरीफ़ फ़रमाता है कि إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ أَتْقَاكُمْ (अलहुजरात:14) अर्थात हे लोगो! तुम में से जो शख़्स अधिक मुत्तक़ी है वही ज़्यादा बड़ा और इज़्ज़त वाला है। अत: आप (स) ने बिना किसी संकोच के अपनी इस रिश्तेदार अर्थात ज़ैनब बिन्त (पुत्री) जहश रज़ि की शादी अपने आज़ाद किए हुए ग़ुलाम और मुंह बोले बेटे ज़ैद बिन हारसह रज़ि के साथ करनी पसन्द किया। पहले तो ज़ैन्ब रज़ि ने अपनी ख़ानदानी बड़ाई का ख़्याल करते हुए इसे नापसंद किया लेकिन अन्त में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बड़ी पुरज़ोर इच्छा को देख कर रज़ामंद हो गईं। बहरहाल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इच्छा और चुनाव के अनुसार ज़ैनब रज़ि और ज़ैद रज़ि की शादी हो गई और यद्यपि ज़ैनब रज़ि ने हर तरह शराफ़त से निभाओ किया मगर ज़ैद रज़ि ने अपने तौर पर यह महसूस किया कि हज़रत ज़ीनब रज़ि के दिल में अभी तक ये ख़लिश छुपी है कि में एक सम्मान्नीय ख़ानदान की लड़की और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की क़रीबी रिश्तेदार हूँ और हज़रत ज़ैद रज़ि एक केवल आज़ाद किए हुए ग़ुलाम हैं और मेरे बराबर नहीं। दूसरी तरफ़ ख़ुद ज़ैद रज़ि के दिल में भी ज़ैनब के मुक़ाबला में अपनी पोज़ीशन के छोटा होने का एहसास था और इस एहसास ने धीरे-धीरे ज़्यादा मज़बूत हो कर उनकी घरेलू ज़िन्दगी को आन्नद रहित कर दिया था और पति पत्नी में असहयोग रहने लगा था। जब यह असहनीय हालत ज़्यादा तरक़्क़ी कर गई तो ज़ैद बिन हारसह रज़ि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अपने विचार में ज़ैनब रज़ि के सुलूक की शिकायत करके उन्हें तलाक़ दे देने की इजाज़त चाही और एक रिवायत में यूं भी आता है कि उन्होंने यह शिकायत की कि ज़ैनब सख़्त ज़बानी से काम लेती है। इसलिए में उसे तलाक़ देना चाहता हूँ। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को स्वाभाविक रूप से यह हालात मालूम करके सदमा भी हुआ मगर आप (स) ने ज़ैद रज़ि को तलाक़ देने से मना फ़रमाया और शायद यह बात महसूस करके कि ज़ैद रज़ि की तरफ़ से निभाओ की कोशिश में कमी है आप (स) ने हज़रत ज़ैद रज़ि को नसीहत फ़रमाई कि अल्लाह का तक़्वा धारण करो और तक़्वा धारण करके जिस तरह भी हो निभाओ करो। इस की कोशिश करो। अत: क़ुरआन शरीफ़ में भी आप के यह शब्द वर्णन हैं कि أَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللّٰهَ (अल्लाहज़ अब:38) कि हे ज़ैद! अपनी बीवी को तलाक़ ना दो और ख़ुदा का तक़्वा धारण करो।आप (स) की इस नसीहत की वजह यह थी कि प्रथम तो नियम अनुसार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तलाक़ को नापसंद फ़रमाते थे। अत: एक अवसर पर आप (स) ने फ़रमाया था कि أَبْغَضُ الْحَلَالِ إِلَى اللّٰهِ الطَّلَاق कि सारी हलाल

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

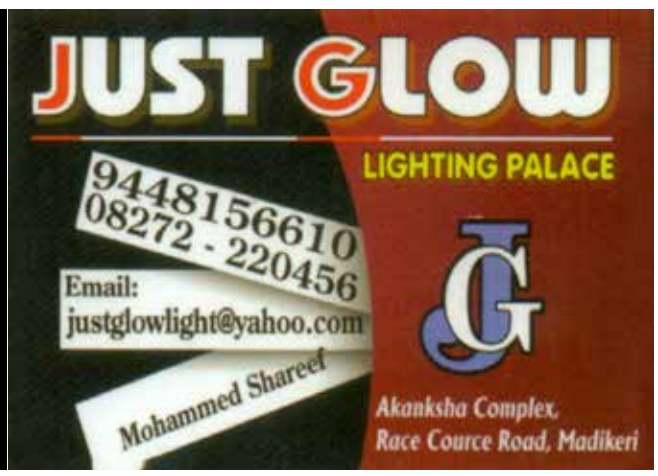

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

चीज़ों में से तलाक़ ख़ुदा को ज़्यादा नापसंद है और इसीलिए इस्लाम में सिर्फ इंतिहाई ईलाज के तौर पर इस की इजाज़त दी गई है। दूसरे जैसा कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाह अन्हो के साहबज़ादे इमाम ज़ैनुल आबेदीन अली बिन हुसैन की रिवायत है और इमाम ज़ुहरी ने इस रिवायत को मज़बूत क़रार दिया है चूँकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पहले से यह वह्य इलाही हो चुकी थी कि ज़ैद बिन हारसह रज़ि अन्त में ज़ैनब रज़ि को तलाक़ दे देंगे और इस के बाद ज़ैनब रज़ि आप (स) के निकाह में आयेंगी इसलिए आप (स) इस मामला में अपना व्यक्तिगत सम्बन्ध समझते हुए बिलकुल ग़ैर मुताल्लिक़ और ग़ैर जांबदाराना रवय्या रखना चाहते थे और अपनी तरफ़ से इस बात की पूरी पूरी कोशिश करना चाहते थे कि ज़ैद रज़ि और ज़ैनब रज़ि के सम्बन्ध के टूटने होने में आप (स) का कोई दख़ल ना हो और जब तक निभाओ की अवस्था असम्भ हो निभाओ होता रहे और सम्बन्ध क़ायम रहे और इसी विचार के अधीन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बड़े इसरार के साथ ज़ैद रज़ि को यह नसीहत फ़रमाई कि तुम तलाक़ ना दो और ख़ुदा का तक़्वा दारण करके जिस तरह भी हो निभाओ करो। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह भी शंका थी कि अगर ज़ैद रज़ि की तलाक़ के बाद ज़ैनब रज़ि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के निकाह में आएं तो लोगों में इस की वजह से एतराज़ होगा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने मुंह बोले बटे की तलाक वाली औरत से शादी कर ली है और चाहेन चाहे परीक्षा की अवस्था पैदा होगी। अत: क़ुरआन शरीफ़ में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि وَتُخْفِيْ فِيْ نَفْسِكَ مَا اللّٰهُ مُبْدِيْهِ وَتَخْشَى النَّاسَ وَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ تَخْشٰهُ (अल्लहज्ज :38) कि हे नबी! तू अपने दिल में छुपाए हुए था वह बात जिसे ख़ुदा ने आख़िर ज़ाहिर कर दिया। ..... وَتُخْفِيْ فِيْ نَفْسِكَ مَا اللّٰهُ जिसे ख़ुदा ने आख़िर ज़ाहिर कर दिया था। और तो लोगों की वजह से डरता था और यक़ीनन ख़ुदा इस बात का बहुत ज़्यादा हक़दार है कि इस से डरा जाए।

बहरहाल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ज़ैद रज़ि को अल्लाह के तक़्वा की नसीहत करके तलाक़ देने से मना फ़रमाया और आप की इस नसीहत को स्वीकार करते हुए ज़ैद रज़ि ख़ामोश हो कर वापस आ गए मगर उखड़ी हुई तबीअतों का मिलना मुश्किल था। दराड़ें पैदा हो चुकी थीं। अब बड़ा मुश्किल था और जो बात ना बननी थी ना बनी और कुछ समय के बाद ज़ैद रज़ि ने तलाक़ दे दी। जब ज़ैनब रज़ि की इद्दत ख़त्म हो चुकी तो उनकी शादी के के बारे में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर फिर वह्य नाज़िल हुई कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को उन्हें ख़ुद अपने निकाह में ले लेना चाहिए और इस ख़ुदाई हुक्म में इस हिक्मत के अतिरिक्त कि इस से हज़रत ज़ैनब रज़ि की दिलदारी हो जाएगी और तलाक वाली औरत के साथ शादी करना मुस्लमानों में बुराई ना समझी जाएगी। यह हिक्मत भी समक्ष थी कि चूँकि हज़रत ज़ैद रज़ि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुंह बोले बेटे थे और आप के बेटे कहलाते थे इसलिए जब आप (स) ख़ुद उस की तलाक वाली औरत से शादी फ़र्मा लेंगे तो इस बात का मुस्लमानों में एक व्यावहारिक असर होगा कि मुँह बोला बेटा वास्तिवक बेटा नहीं होता और न इस पर हक़ीक़ी बेटों वाले आदेश जारी होते हैं और भविष्य के लिए अरब की जाहिलाना रस्म मुस्लमानों में पूरे तौर पर मिट जाएगी। अत: इस बारे में क़ुरआन शरीफ़ ने जो तारीख़ इस्लामी का सबसे ज़्यादा सही रिकार्ड है यूं है

فَلَمَّا قَضٰى زَيْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنٰكَهَا لِكَيْ لَا يَكُوْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ حَرَجٌ فِيْ اَزْوَاجِ اَدْعِيَآئِهِمْ اِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًا وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا

(अल्अहज़ाब 38)

अर्थात जब ज़ैद ने ज़ैनब से सम्बन्ध विच्छेद कर लिया तो हम ने ज़ैनब की शादी तेरे साथ कर दी ताकि मोमिनों के लिए अपने मुँह बोले बेटों की तलाक वाली बीवियों के साथ शादी करने में कोई रोक ना रहे बाद उस के कि वह मुँह बोले बेटे अपनी बीवियों से सम्बन्ध विच्छेद कर लें और ख़ुदा का यह हुक्म इसी तरह पूरा होना था।

अत: इस ख़ुदाई वह्य के नाज़िल होने के बाद जिसमें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अपनी ख़ाहिश और ख़्याल का हरगिज़ कोई दख़ल नहीं था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ज़ैनब रज़ि के साथ शादी का फ़ैसला फ़रमाया और फिर हज़रत ज़ैद रज़ि के हाथ ही हज़रत ज़ैनब रज़ि को शादी का पैग़ाम भिजवाया और हज़रत ज़ैनब रज़ि की तरफ़ से रजामंदी का इज़हार होने पर उन के भाई अबू अहमद बिन जह्श ने उनकी तरफ़ से वली हो कर चार-सौ दिरहम में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ उन का निकाह कर दिया और इस तरह वह पुरातन रस्म ,जो अरब की ज़मीन में सुदृढ़ हो चुकी थी ,आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के व्यक्तिगत नमूने के नतीजे में इस्लाम में जड़ से उखेड़ कर फेंक दी गई।

इस जगह यह वर्णन भी ज़रूरी है कि प्राय इतिहासकारों और मुहद्दिसीन का यह विचार है कि चूँकि ज़ैनब रज़ि की शादी के के बारे में ख़ुदा तआला की वह्य नाज़िल हुई थी और ख़ुदा के ख़ास हुक्म से यह शादी हुई थी इसलिए ज़ाहिरी तौर पर उनके निकाह की रस्म अदा नहीं की गई मगर यह विचार ठीक नहीं है। बेशक ख़ुदा के हुक्म से यह शादी हुई और कहा जा सकता है कि आसमान पर निकाह पढ़ा गया मगर इस वजह से शरीयत की ज़ाहिरी रस्म जो थी वह भी ख़ुदा ही की मुक़र्रर किए हुए है इस से आज़ादी हासिल नहीं हो सकती थी। अत: इब्ने हश्शाम की रिवायत ,जिसका उद्धरण पहले दर्ज किया गया है और जिस में ज़ाहिरी रस्म निकाह की घटना का होना बताया गया है ,इस मामला में स्पष्ट है और किसी शक तथा शंका की गुंजाइश नहीं। और यह जो हदीस में आता है कि दूसरी उम्महातुल मोमनीन के मुक़ाबले में हज़रत ज़ैनब रज़ि यह फ़ख़र क्या करती थीं कि तुम्हारे निकाह तुम्हारे वलियों ने ज़मीन पर पढ़ाए हैं और मेरा निकाह आसमान पर हुआ है, इस से भी यह नतीजा निकालना उचित नहीं कि हज़रत ज़ैनब रज़ि के निकाह की ज़ाहिरी रस्म अदा नहीं हुई थी क्योंकि बावजूद ज़ाहिरी रस्म की अदायगी के उनका यह फ़ख़र क़ायम रहता है कि उनका निकाह ख़ुदा के विशेष हुक्म से आसमान पर हुआ मगर उस के मुक़ाबला पर दूसरी उम्माहातुल मोमनीन की शादियां साधारण कारणों के अधीन ज़ाहिरी रस्म की अदायगी के साथ हुईं ।

एक दूसरी रिवायत में आता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बिना आज्ञा के ज़ैनब रज़ि के पास तशरीफ़ ले गए थे और इस से भी यह नतीजा निकाला जाता है कि उनके निकाह की ज़ाहिरी रस्म अदा नहीं हुई थी मगर ग़ौर किया जा वह तो इस बात को भी ज़ाहिरी रस्म के अदा होने या ना होने के सवाल से कोई सम्बन्ध नहीं है क्योंकि अगर इस से यह अभिप्राय है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत ज़ैनब रज़ि के घर बग़ैर इजाज़त चले गए थे तो यह ग़लत और खिलाफ घटना है क्योंकि बुख़ारी की स्पष्ट रिवायत (बड़ी वाज़िह रिवायत) में यह वर्णन है कि शादी के बाद ज़ैनब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के घर में रुख़स्त हो कर आई थीं ना कि आप (स) उनके घर गए थे और अगर इस रिवायत से यह मुराद है कि जब वह रुख़स्त हो कर आप (स) के घर आ गईं तो उस के बाद आप (स) उनके पास बिना आज्ञा के तशरीफ़ ले गए तो यह कोई ग़ैरमामूली और नियम के खिलाफ बात नहीं है क्योंकि जब वह आप (स) सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बीवी बन कर आप (स) के घर आ गई थीं तो फिर आप (स) ने बहरहाल उनके पास जाना ही था और आप (स) को आज्ञा की ज़रूरत नहीं थी। अत: आज्ञा ना लेने वाली रिवायत का हरगिज़ कोई सम्बन्ध इस सवाल से नहीं है कि आप (स) के इस निकाह की ज़ाहिरी रस्म अदा की गई या नहीं। और सच्चाई यही है जैसा कि इब्ने हश्शाम की रिवायत में स्पष्ट किया गया है कि बावजूद ख़ुदा तआला हुक्म के इस निकाह की बाक़ायदा रस्म अदा की गई थी। और अक़्ल भी यही चाहती है कि ऐसा हुआ हो क्योंकि पहले तो आम नियम में छूट की कोई वजह नहीं थी और दूसरे जब इस निकाह में एक रस्म का तोड़ना और इस के असर को नष्ट करना उद्देश्य था। (यह पहले रस्म थी और बड़ी पक्की रस्म थी कि मुंह बोले बेटे की बीवी से निकाह नहीं हो सकता और इस रस्म को तोड़ना मक़सद था) तो इस बात की फिर अधिक ज़रूरत थी, बहुत ज़्यादा ज़रूरत थी कि यह निकाह बड़े ऐलान के साथ किया जाता और बड़ी गवाहियों के सामने क्या जाता ताकि दुनिया को पता लगता कि यह रस्म आज ख़त्म हो रही है।

(उद्धरित सीरत ख़ातमुन्निबय्यीन पृष्ठ 543 से 546)

हज़रत ज़ैद रज़ि की ज़िन्दगी की घटनाओं के सम्बन्ध में हज़रत ज़ेनब रज़ि के बारे में और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शादी के बारे में भी मैंने कुछ विस्तार से यह वर्णन इसलिए किया है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से हज़रत ज़ैनब रज़ि की शादी के बारे में आजकल भी आलोचक सवाल और एतराज़ करते हैं इसलिए इस बारे में हमें कुछ तफ़सीली ज्ञान भी होना चाहिए। इस का कुछ और विस्तार भी हैं ।हज़रत ज़ैद रज़ि के बारे में भी कुछ बातें वर्णन करने वाली हैं। तो ये दोनों बातें जिस हद तक वर्णन करने की ज़रूरत हुई मैं भविष्य में भी करूँगा। हज़रत ज़ैद के बारे में यह सिलसिला अभी जारी है।

(अल्फज़ल इंटरनेशनल 31 मई 2019 ई पृष्ठ 5-10)

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

सात सौ मील का सफ़र 13 घंटे में और Zion से आने वाले 750 मील का सफ़र 14 घंटे में तय करके पहुंचे थे। मिलवाकी से आने वाले लोगों और फ़ैमिलीज़ 800 मील का सफ़र 15 घंटे में और अवरो ओकोष से आने वाले 850 मील का सफ़र लगभग 16 घंटे में तय करके अपने आक़ा के स्वागत के लिए पहुंचे थे।

फिर कुछ बड़ी दौर की जमाअतों से आने वाले लोगों और फ़ैमिलीज़ द्वारा जहाज़ सफ़र तय करके पहुंचे थे। Miami और Minneapolis से आने वाले लोगों अढ़ाई घंटे जहाज़ का सफ़र तय करके पहुंचे थे। डैलस और हीवसटन से आने वाले तीन घंटे जहाज़ का सफ़र करके पहुंचे थे। जबकि बे प्वाईंट, सयाटल, सीलीकोन वैली और लास अंजुलज़ से आने वाले लोगों और फ़ैमिलीज़ लगभग तीन हज़ार मील का सफ़र तय करके अपने प्यारे आक़ा के स्वागत के लिए वाशिंगटन पहुंचे थे। उन्होंने ये दूरी जहाज़ के द्वारा पाँच घंटे में तय की थी।

बच्चों और बच्चियों ने रंग बिरंगे ख़ूबसूरत कपड़े पहने हुए थे। इन लोगों में एक बड़ी संख्या ऐसे ख़ानदानों की थी जिन्होंने अपनी ज़िन्दगी में पहली बार अपने प्यारे आक़ा को अपने क़रीब से देखना था। उनका एक एक लम्हा बेताबी से गुज़र रहा था। MTA के कैमरे स्वागत के इस सारे मंज़र को रिकार्ड कर रहे थे। प्रत्येक की नज़र उस बाहरी गेट पर लगी हुई थी जहां से किसी वक़्त भी हुज़ूर अनवर की गाड़ी इस अहमदिया सैंटर में दाख़िल होने वाली थी।

आख़िर वे इंतिहाई बरकतों वाले और हर एक के लिए यादगार लम्हा आ पहुंचा और 10 बजकर 40 मिनट पर हुज़ूर अनवर की गाड़ी मस्जिद के बाहरी गेट से अंदर दाख़िल हुई। हुज़ूर अनवर वहीं गाड़ी से बाहर तशरीफ़ ले आए। इस अवसर पर आदरणीय डाक्टर नसीम रहमत उल्लाह साहिब नायब अमीर यू यस ए (बराए मिड वैस्ट ऐंड मीडिया) आदरणीय डाक्टर हमीदुर्रहमान साहिब नायब अमीर यू यस ए (बराए वैस्ट कोस्ट ऐंड साऊथ वैस्ट) और आदरणीय फ़लाहुद्दीन शमस साहिब नायब अमीर यू एस ए (बराए जज़ाइर ममालिक पैसिफिक आई लौंडज़) ने हुज़ूर अनवर को ख़ुश-आमदीद कहा और मुलाक़ात का अवसर हासिल किया।

हुज़ूर अनवर ने अपना हाथ बुलंद करके सबको अस्सलामो अलैकुम कहा। दूसरी तरफ़ से भी हर मर्द तथा औरत, बच्चों, नौजवानों और बूढ़ों के हाथ बुलंद हो गए। आसमान तक नारे निरन्तर लगाए जा रहे थे। अहलन वसहलन व मरहबा या अमीरुल मोमिनीन की आवाज़ें हर तरफ़ से बुलंद हो रही थीं। बच्चियों के ग्रुप स्वागत गीत पेश कर रहे थे। मस्जिद बैयतुर्रहमान के बाहरी हिस्सा में एक तरफ़ मर्द दो लाईन खड़े थे तो दूसरे हिस्सा में औरतों का एक हुजूम था। अपने आक़ा का स्वागत करने वालों की संख्या साढ़े तीन हज़ार से बढ़ चुकी थी। हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए अपने इन आशिकों के मध्य से गुज़रते हुए और अपना हाथ बुलंद करते हुए इस आख़री हिस्सा तक तशरीफ़ ले गए जहां तक ये हुजूम फैला हुआ था। इस दौरान क़दम क़दम पर हुज़ूर अस्सलामो अलैकुम और अहलन व सहलन वमरहबा की आवाज़ें बुलंद हो रही थीं। हुज़ूर अनवर अपना हाथ बुलंद करके उनके नारों और अस्सलामो अलैकुम का जवाब दे रहे थे और आज अमरीका की सरज़मीन पर भी इशक़ तथा मुहब्बत और फ़िदाईत की नई दास्तानें लिखी जा रही थीं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के क़ियाम का प्रबंध मस्जिद बैयतुर्रहमान के सेहन में स्थित गेस्ट हाऊस में किया गया था। हुज़ूर अनवर जमाअत के लोगों के मध्य से गुज़रते हुए नारों के बीच में अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

11 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने मस्जिद बैयतुर्रहमान तशरीफ़ ला कर नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपनी रिहायश के स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

जमाअत अहमदिया अमरीका की तारीख़ में साल 1920 को एक नुमायां विशेषता हासिल है कि इस साल अमरीका की सरज़मीन में जमाअत अहमदिया के क़ियाम का आरम्भ हुआ।

हज़रत ख़लीफतुल मसीह एलिसानी रज़ी अल्लाह अन्हो ने हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब रज़ि को जो उस वक़्त इंग्लिस्तान में मुबल्लिग़ ख़िदमत दे रहे थे, अमरीका चले जाने का हुक्म फ़रमाया। अत: हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब रज़ि अमरीका के पहले मुबल्लिग़ के तौर पर 26 जनवरी 1920 ई को इंग्लिस्तान की बंदरगाह Liverpool से रवाना हुए और इक्कीस दिन के समुन्द्री सफ़र के बाद 15 फरवरी 1920 ई को अमरीका की बंदरगाह Penns Landing फ़िलाडलफ़िया पर उतरे लेकिन आपको देश के अंदर दाख़िल होने से रोक दिया गया और समुन्द्र के किनारे एक मकान में बंद कर दिया गया और क़ैद कर दिया गया। इस मकान से बाहर निकलने की मनाही थी। मगर छत पर टहल सकते थे। इस का दरवाज़ा दिन में सिर्फ दो बार खुलता था। इस मकान में कुछ यूरोपियन भी नज़रबंद थे। हज़रत मुफ़्ती साहिब ने अवसर से फ़ायदा उठा कर अपने साथी क़ैदियों को तब्लीग़ करना शुरू कर दी। जिसके नतीजा में दो माह के अंदर पंद्रह क़ैदियों ने इस्लाम क़बूल कर लिया। सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह अन्हो को जब यह सूचना मिली कि हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब रज़ि को अमरीका में क़ैद कर दिया गया है तो आपने अमरीकी हुकूमत के इस रवैय्या पर सख़्त अफ़सोस का प्रकट करते हुए फ़रमाया:

अमरीका जिसे ताक़तवर होने का दावा है इस वक़्त तक इस ने माद्दी सल्तनतों का मुक़ाबला किया और उन्हें शिकस्त दी होगी। रुहानी सल्तनत से उसने मुक़ाबला करके नहीं देखा। अब अगर उसने हम से मुक़ाबला किया तो उसे मालूम हो जाएगा कि हमें वह हरगिज़ शिकस्त नहीं दे सकता क्योंकि ख़ुदा हमारे साथ है। हम अमरीका के इर्दगिर्द के इलाक़ों में तब्लीग़ करेंगे और वहां के लोगों को मुसलमान बना कर अमरीका भेजेंगे और उनको अमरीका नहीं रोक सकेगा और हम उम्मीद रखते हैं कि अमरीका में एक दिन ला इलाहा इलाहा इल्लाह मुहम्मद रसूलुल्लाह की आवाज़ गूँजेगी और ज़रूर गूँजेगी।

मई 1920 ई में अमरीकी हुकूमत की तरफ़ से हज़रत मुफ़्ती साहिब रज़ि से पाबंदी उठा ली गई, जिस की फ़ौरी वजह यह बनी कि ऐसा ना हो कि आप नज़रबंद सारे क़ैदीयों को मुसलमान बना लें। अत: हुक्काम ने आपके अमरीका में दाख़िल होने का फ़ैसला कर दिया।

हज़रत मुफ़्ती साहिब रज़ि ने न्यूयार्क में एक मकान किराया पर लेकर जमाअत के मिशन का आरम्भ किया। फिर 1921 ई में आप शिकागो स्थनांतरित हो गए और नियमित एक इमारत ख़रीद कर जमाअत का मर्कज़ क़ायम किया। 1950 ई में शिकागो से जमाअत का यह मर्कज़ वाशिंगटन स्थनांतरित कर दिया गया। आज अल्लाह तआला के फ़ज़ल से सारे अमरीका में सारी बड़े शहरों में और हर स्टेट में जमाअतें क़ायम हो चुकी हैं।

अमरीका में इस वक़्त 74 स्थानों पर जमाअएं क़ायम हैं। जमाअत की 53 मस्जिद और 26 मिशन हाऊसज़ हैं। कुछ स्थानों पर बड़ी खुली इमारतें और मर्कज़ और मस्जिद तामीर की गई हैं। इस सफ़र में भी तीन मस्जिद के उद्घाटन का प्रोग्राम है और नई मस्जिद और जमाअत का सैंटरज़ की तामीर का सिलसिला निरन्तर जारी है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद औने हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब रज़ि के क़ैद किए जाने पर 1920 ई में फ़रमाया था कि अमरीका हमें हरगिज़ शिकस्त नहीं दे सकता। अमरीका में एक दिन ला इलाहा इल्लाह मुहम्मद रसूलुल्लाह की सदा गूँजेगी और ज़रूर गूँजेगी। आज अल्लाह तआला के फ़ज़ल से सारे अमरीका में गांव गांव, बस्ती-बस्ती अहमदी आबाद हैं और बड़ी मज़बूत, कर्मठ और मज़बूत जमाअतें क़ायम हैं और अमरीका के चप्पा चप्पा पर दिन रात ला इलाहा इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मद रसूलुल्लाह की सदा गूंज रही है।

हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ का यह दौरा अमरीका इंतिहाई ग़ैरमामूली बरकतों और कामयाबियों पर आधारित दौरा है। अल्लाह तआला के फ़ज़ल तथा दया से यह दौरा तारीख़ का एक इन्क़िलाब पेदा करने वाला दौरा है जिस में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप के सच्चे आशिक हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पेशगोइयों के ठीक अनुसार जमाअत अहमदिया एक मंज़िल से दूसरी मंज़िल को फलांगते हुए आसमान की ऊंचाइयों को छू रही है और इस के नतीजा में अल्लाह तआला के फ़ज़ल से इस ज़मीन में भी जमाअत की अज़ीमुश्शान तरक़्क़ी और विजय के नए दरवाज़े खुल रहे हैं और जमाअत अहमदिया अमरीका कामयाबियों के एक नए दौर में दाख़िल हो रही है।

16 अक्तूबर 2018 ई (दिनांक मंगलवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह छ: बज कर पंद्रह मिनट पर मस्जिद बैयतुर्रहमान तशरीफ़ ला कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला

बेनस्रेहिल अज़ीज़ विभिन्न दफ़्तरी मामलों को पूरा करने में व्यस्त रहे।

आज प्रोग्राम के अनुसार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के दौरा के बारे में से जो विभिन्न प्रबन्ध किए गए हैं उनके निरीक्षण का प्रोग्राम था। इसी तरह मस्जिद बैतुल रहमान से जुड़े ऑफ़िस बलॉक में कुछ तबदीलीयां की गई हैं, उन का निरीक्षण भी शामिल था। इसी तरह यहां स्थापित MTA अर्थ स्टेशन की नई इमारत बनी है इस का उद्घाटन भी शामिल था।

जमाअत अहमदिया अमरीका के इस मर्कज़ी सैंटर का कुल क्षेत्रफल लगभग 18 एकड़ है। यहां जमाअत अमरीका की सबसे बड़ी मस्जिद मस्जिद बैतुल रहमान की तामीर 1994 ई में पूर्ण हुई और हज़रत ख़लीफतुल मसीह अलराबे रहेमहुल्लाह तआला ने अक्तूबर 1994 ई में अपने दौरा अमरीका के दौरान इस मस्जिद का उद्घाटन फ़रमाया। इस मस्जिद में डेढ़ हज़ार के लगभग लोग नमाज़ अदा कर सकते हैं। जमाअत के इस मर्कज़ी कम्पलैक्स में मस्जिद के अतिरिक्त विभिन्न जमाअत के दफ़्तर, मिशन हाऊस, लाइब्रेरी, मर्कज़ी किचन, डाइनिंग हाल इत्यादि शामिल हैं। इसके अतिरिक्त अर्थ स्टेशन MTA और विभिन्न रिहायशी अपार्टमंट्स हैं।

MTA टैली पोर्ट का उद्घाटन

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ बारह बज कर पाँच मिनट पर अपनी रिहायश गाह से बाहर तशरीफ़ लाए और सबसे पहले अर्थ स्टेशन तशरीफ़ ले गए और यहां बाहरी हिस्सा में लगी तख़्ती का उद्घाटन फ़रमाया और दुआ करवाई और इस अवसर पर मैनेजिंग डायरेक्टर MTA इंटरनेशनल लंदन आदरणीय मुनीरुद्दीन शम्स साहिब और डायरेक्टर मसरूर टैली पोर्ट अमरीका आदरणीय मुनीर अहमद चौधरी साहिब को कुछ ज़रूरी हिदायते फ़रमाईं। इस के बाद हुज़ूर अनवर टैली पोर्ट के अंदर तशरीफ़ ले गए। MTA की नई High Defination सर्विस के लिए जो सिस्टम लगाए गए हैं उनके बारे में डायरेक्टर साहिब ने विस्तार से निवेदन की। यह नई सर्विस नॉर्थ अमरीका के देशों के लिए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला की विशेष हिदायत पर यहां के एक मशहूर सैटेलाइट गैलेक्सी 19 पर शुरू की गई है जिस पर सैंकड़ों अरबी, फ़ारसी, उर्दू और अन्य ज़बानों के फ्री चैनल्ज़ मौजूद हैं। तब्लीग़ इस्लाम के लिए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला की ख़ास तवज्जा और आज्ञा के साथ इस सैटेलाइट पर मुआहिदा किया गया जिस पर MTA के तीन चैनल MTA1, MTA1+3, MTA3 ARABIA उच्च क्वालिटी में पेश किए जाते हैं।

इस के बाद हुज़ूर अनवर मास्टर कंट्रोल रुम में तशरीफ़ ले गए जहां नए कंट्रोल और मॉनीट्रिंग का सिस्टम लगाया गया है। हुज़ूर अनवर ने इस सिस्टम के बारे में विभिन्न मामलों के बारे में पूछा। डायरेक्टर साहिब ने इस बारे में विस्तार से निवेदन किया जिस पर हुज़ूर अनवर ने ख़ुशनुदी का प्रकट फ़रमाया। इस के बाद हुज़ूर अनवर ने मसरूर टैली पोर्ट के बाक़ी हिस्सों और दफ़्तरों व मीटंग रुम का निरीक्षण फ़रमाया।

साल 2008 ई में हुज़ूर अनवर ने अमरीका का पहला दौरा फ़रमाया था। इस वक़्त हुज़ूर अनवर ने अर्थ स्टेशन के निरीक्षण के दौरान इमारत की ख़स्ता-हाली को देखकर उस की ताअमीर-ए-नौ की कार्रवाई करने के बारे में इरशाद फ़रमाया था। इस के बाद धीरे-धीरे विभिन्न स्तरों में इस की तामीर होती रही। 1994 ई में जब इस अर्थ स्टेशन का क़ियाम हुआ तो यह 925 वर्गफुट पर आधारित लगभग एक सौ साल पुराने छोटे से रिहायशी मकान पर आधारित था। एक कमरे में मेज़ पर कुछ टीवी मॉनीट्रिंग के लिए रखे हुए थे। ट्रांसमिशन की सारी मशीनें बाहर एक ट्रेलर में थीं जिसकी वजह से ऑपरेशन में बहुत मुश्किलें थीं। इस पुरानी सारी इमारत को गिरा कर अब नई इमारत तामीर की गई है। इस नई इमारत का फुट प्रिंट 3,800 वर्ग फुट है। यह इमारत पुरानी इमारत से चार गुना बड़ी है और इस वक़्त MTA का सारा ऑप्रेशन इस इमारत के अंदर है और इलेकट्रानिक मशीनरी, कंट्रोल रुम, ट्रांसमिशन रुम सब इस इमारत के अंदर हैं और बेहतरीन सेट अप होने की वजह से मसरूर टैली पोर्ट पर बाहर से आने वाली कंपनीयां ना सिर्फ प्रशंसा करती हैं बल्कि अपने स्टेशन्ज़ के लिए राहनुमाई भी हासिल करती हैं।

दफ़्तरों और इमारत के निरीक्षण के बाद हुज़ूर अनवर बाहर तशरीफ़ लाए और इमारत के उत्तरी सेहन में तशरीफ़ ले गए जहां सैंटर्ल और साऊथ अमरीका के देशों को MTA के प्रसारण पहुंचाने के लिए 4.8 मीटर की सैटेलाइट ट्रांसमिशन की डिश लगी है। हुज़ूर अनवर ने इस डिश के साइज़ और काम के बारे में कुछ बातें पूछे। डायरेक्टर साहिब टैली पोर्ट और आदरणीय मुनीर ऊदा साहिब डायरेक्टर प्रोडक्शन MTA इंटरनेशनल लंदन ने इस बारे में जवाब दिए। इसी सेहन में हुज़ूर अनवर ने MTA इंटरनेशनल के नए प्रोडक्शन स्टूडियो की तामीर के बारे में पूछे फ़रमाया। नए प्रोडक्शन स्टूडियो की तामीर के लिए लगभग डेढ़ एकड़ का टुकड़ा ज़मीन हुज़ूर अनवर की हिदायत के अनुसार मर्कज़ ने दो साल पहले ख़रीदा था और अब यह प्लैनिंग के स्तर में है। हुज़ूर अनवर ने इस ज़मीन का जायज़ा लिया। हुज़ूर अनवर के पूछने पर आदरणीय अमीर साहिब यू एस ए साहिबज़ादा मिर्ज़ा मग़फ़ूर अहमद साहिब ने भी इस बारे में कुछ बातें निवेदन कीं।

अमरीका के इस दौरा के दौरान जुमा के ख़ुत्बों, मस्जिद के उद्घाटन और अन्य प्रोग्रामों की कवरेज और रिकार्डिंग के लिए MTA इंटरनेशनल की एक टीम लंदन से आई हुई थी। हुज़ूर अनवर ने टीम के मेम्बरों से कुछ बातों के बारे में गुफ़्तगु फ़रमाई। हुज़ूर अनवर के पूछने पर टीम के मेम्बरों ने बताया कि सारा सामान सुरक्षा के साथ आ गया है।

मस्जिद बैयतुर्रहमान का निरीक्षण

MTA अर्थ स्टेशन के निरीक्षण के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद से जुड़े हुए ऑफ़िस बलॉक में तशरीफ़ ले आए और कान्फ्रैंस हाल देखा। इस के बाद विभाग जनरल सेक्रेटरी, विभाग जायदाद और विभाग फिनांस के दफ़्तरों का निरीक्षण फ़रमाया। बेसमनट में स्थापित दफ़्तरों का भी हुज़ूर अनवर ने निरीक्षण फ़रमाया। जिन में विभाग क़ज़ा तथा अन्य दफ़्तर शामिल हैं। और यहां मर्कज़ी लाइब्रेरी भी स्थापित है। हुज़ूर अनवर इस लाइब्रेरी में भी तशरीफ़ लाए। यहां एक फ्री एलोपैथिक क्लीनिक भी स्थापित है। जहां डाक्टर मुहम्मद अशर्फ़ मेलो साहिब सर्विस प्रदान करते हैं। हुज़ूर अनवर ने इस क्लीनिक का भी निरीक्षण फ़रमाया। इस के बाद हुज़ूर अनवर ने डाइनिंग हाल और किचन का निरीक्षण फ़रमाया। किचन के काम करने वालों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला मस्जिद के बाहरी हिस्सा में तशरीफ़ ले आए और यहां अस्थायी तौर पर स्थापित विभागों का निरीक्षण फ़रमाया। हुज़ूर अनवर विभाग स्कैनिंग में तशरीफ़ ले आए और काम करने वाले से पूछे फ़रमाया कि किस तरह स्कैनिंग करते हैं और कार्ड इत्यादि चैक करते हैं। काम करने वाले ने अपने काम के बारे में बताया।

इस के बाद हुज़ूर अनवर ने विभाग रजिस्ट्रेशन का निरीक्षण फ़रमाया। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ इस मार्की मैं तशरीफ़ ले आए जहां मर्दों के खाना खाने का प्रबंध किया गया था। हुज़ूर अनवर ने पूछे फ़रमाया कि कितने लोगों के खाने का प्रबंध किया गया है जिस पर अमीर साहिब ने निवेदन किया कि चार हज़ार लोगों के खाने का प्रबंध किया गया है। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ लंगर ख़ाना में तशरीफ़ ले आए। यहां चिकन और आलू गोश्त का सालन तय्यार किया गया था। हुज़ूर अनवर ने दोनों सालन चैक किए कि सही तौर पर पक्के हुए हैं और आलू और गोश्त इत्यादि गला हुआ है। हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए काम करने वाले से गुफ़्तगु फ़रमाई और एक लुक़मा भी खाया।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने ख़िदमते ख़लक़ विभाग और सैक्योरिटी के दफ़्तर का निरीक्षण फ़रमाया। इस के बाद हुज़ूर अनवर एक इमारत में स्थापित बुक स्टोर में तशरीफ़ ले गए। बक स्टोर के निरीक्षण के बाद हुज़ूर अनवर दया करते हुए मलिक तारिक़ हारून साहिब के घर तशरीफ़ ले गए। महोदय वाक़िफ़ ज़िन्दगी हैं और रिव्यू आफ़ रीलीजनज़ विभाग में ख़िदमत कर रहे हैं। इस के बाद हुज़ूर अनवर कुछ देर के लिए मुख़तार मिलही साहिब नेशनल जनरल सेक्रेटरी जमाअत यू एस ए के घर तशरीफ़ ले गए। निरीक्षण के इस प्रोग्राम के आख़िर पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने आदरणीय फ़हीम यूनुस क़ुरैशी साहिब नायब अमीर यू एस ए नेशनल सेक्रेटरी तर्बीयत से मकानों की तामीर के प्रोजेक्ट के बारे में पूछा।

मस्जिद बैयतुर्रहमान से लगभग पच्चास मील के दूरी पर मजलिस अंसार अल्लाह यू एस ए के तहत JAPA के इलाक़े में एक दरिया के किनारे एक हाऊसिंग स्कीम पर काम हो रहा है जहां सारे घर अहमदी लोगों के होंगे और घरों के मध्य एक जगह मस्जिद के लिए भी विशेष रूप से रखी गई है। फ़हीम यूनुस साहिब ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में निवेदन किया कि पहले क़दम पर तो जज ने हमारे हक़ में फ़ैसला दिया है। अभी इस पर और वक़्त लगेगा। महोदय ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में इस रास्ते में आने वाली रोकूँ के दौर होने के लिए दुआ की दरख़ास्त की। इस पर

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि:। हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि जब किसी अच्छे काम में देरी हो रही हो तो ख़ुदा तआला दुआ के लिए अवसर दे रहा होता है। कोई फ़िक्र की बात नहीं, घबराना नहीं चाहिए, बस दुआ करें। निरीक्षण के बाद सवा एक बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने दो बजे मस्जिद बैयतुर्रहमान में तशरीफ़ ला कर नमाज़ ज़ुहर तथा असर जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए।

फ़ैमिली मुलाक़ातें

प्रोग्राम के अनुसार छ: बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ लाए और विभिन्न जमाअतों से आने वाले लोगों और फ़ैमिलीज़ की मुलाक़ातों का प्रोग्राम शुरू हुआ। आज शाम के इस सैशन में 52 फ़ैमिलीज़ और 27 लोगों ने इन्फ़िरादी तौर पर अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। कुल 273 लोगों ने मुलाकात का सौभाग्य पाया। हर एक ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र और छात्राओं को क़लम प्रदान फ़रमाए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान फ़रमाए।

आज मुलाक़ात करने वालों में वाशिंगटन और उसके इर्दगिर्द की जमाअतों के अतिरिक्त Boston और Oshkosh की जमाअतों से भी फ़ैमिलीज़ आई थीं। बोस्टन से आने वाले आठ घंटे का सफ़र तय कर के आए थे जब कि Oshkosh से आने 850 मील का लम्बा सफ़र 16 घंटे में तय कर के अपने आक़ा से मुलाक़ात की सौभाग्य को पाने के लिए पहुंचे थे।

आज मुलाक़ात करने वालों में एक बहुत बड़ी संख्या ऐसी फ़ैमिलीज़ की थी जो अपनी ज़िन्दगी में पहली बार हुज़ूर अनवर से मुलाकात का सौभाग्य पा रही थीं। आज का दिन उनकी ज़िन्दगियों में एक इंतिहाई बरकतों वाले और यादगार दिन था कि ज़िन्दगी में पहली बार ख़लीफतुल मसीह के क़ुरब में कुछ घड़ियाँ गुज़ारने का सौभाग्य मिला और दुआओं और बरकतों के खज़ाने प्राप्त किए। कितने ही ख़ुशनसीब हैं ये लोग जिन्होंने अपनी ज़िन्दगी में यह सौभाग्य पाया। जहां ये लोग ख़ुद उन लमहात को हमेशा याद रखेंगे वहां उनकी नस्लें भी इन क़ुरब के लमहात को याद रखेंगी और उनकी हिफ़ाज़त करेंगी कि हमारी सारी ज़िन्दगी एक तरफ़ और ये कुछ लमहात एक तरफ़ जो हमारा धर्म भी सँवार गए और दुनिया भी सँवार गई।

बहुत सी फ़ैमिलीज़ जब मुलाक़ात करके हुज़ूर अनवर के दफ़्तर से बाहर आती थीं तो उनकी आँखें ख़ुशी तथा प्रसन्नता के आँसूओं से भरी होती थीं कि आज ज़िन्दगी में ख़ुदा ने यह दिन दिखाया और हमें ख़लीफतुल मसीह के दर्शन के कुछ क्षण नसीब हो गए। अल्लाह तआला ये सौभाग्य हम सब के लिए मुबारक करे।

मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम आठ बज कर पैंतालीस मिनट तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने मस्जिद बैयतुर्रहमान तशरीफ़ ला कर नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

17 अक्तूबर 2018 ई (दिनांक बुध)

फ़िलाडलफ़िया में बरकतों वाला आना

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह सवा छ: बजे मस्जिद बैतुल रहमान में तशरीफ़ ला कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ फ़ज्र की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर ने दफ़्तरी डाक और ख़ुतों और रिपोर्टस को देखा और हिदायतों से नवाज़ा।

आज प्रोग्राम के अनुसार यहां से फ़िलाडलफ़िया के लिए रवानगी थी। ग्यारह बज कर बीस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपनी रिहायश गाह से बाहर तशरीफ़ लाए और दुआ करवाई और क़ाफ़िला फ़िलाडलफ़िया के लिए रवाना हुआ। मस्जिद बैयतुर्रहमान से फ़िलाडलफ़िया का दूरी 132 मील है। एक बज कर पंद्रह मिनट पर जब क़ाफ़िला की गाड़ियां फ़िलाडलफ़िया शहर की सीमा में दाख़िल हुईं तो यहां की मुक़ामी पुलिस की दो गाड़ियों ने हुज़ूर अनवर की गाड़ी को Escort किया और शहर के अंदर रास्ता साफ करते रहे।

आज का दिन जमाअत फ़िलाडलफ़िया के लिए बड़ा ही मुबारक और एक तारीख़ी दिन था। हर छोटा बड़ा, मर्द वज़न, जवान बूढ़ा ख़ुशी तथा प्रसन्नता से भरा हुआ था। आज उनके शहर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के मुबारक क़दम पहली बार पड़ने वाले थे। ये लोग सुबह से ही नई तामीर होने वाली मस्जिद मस्जिद बैतुल आफ़ियत पहुंचना शुरू हो गए थे। फ़िलाडलफ़िया की मुक़ामी जमाअत के अतिरिक्त न्यूयार्क, सैंटर्ल जर्सी, नॉर्थ जर्सी,बनघम टन,अलबनी,,बोस्टन,फच बर्ग,लोरियल, अवश् कोष,Syracuse, बाल्टी मोर,रो चिसटर, हारिस बर्ग और वर्जीनिया से भी बड़ी संख्या में जमाअत के लोगों और फ़ैमिलीज़ बड़े लंबे सफ़र तय करके आई थीं। दो सौ मील से लेकर नौ सौ पच्चास मील तक का सफ़र विभिन्न जमाअतों से लोगों तय करके पहुंचे थे।

हुज़ूर अनवर के आने से पहले जमाअत फ़िलाडलफ़िया के मर्कज़ मस्जिद बैतुल आफ़ियत का बाहरी हिस्सा जमाअत के लोगों से भर चुका था। मर्दो औरत की कुल संख्या एक हज़ार नौ सौ से अधिक थी। एक बज कर पैंतीस मिनट पर हुज़ूर अनवर की यहां तशरीफ़ लाए तो सारी फ़िज़ा नारों से गूंज उठी। बच्चियों के ग्रुपस ने स्वागत गीत पेश किए। जैसे ही हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ गाड़ी से बाहर तशरीफ़ लाए आदरणीय साहिबज़ादा मिर्ज़ा मग़फ़ूर अहमद साहिब अमीर यू एस ए , आदरणीय डाक्टर नसीम रहमतुल्लाह साहिब नायब अमीर यू एस ए और आदरणीय मुजीबुल्लाह चौधरी साहिब सौर जमाअत फ़िलाडलफ़िया ने हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त किया।

मस्जिद बैतुल आफ़ियत का निरीक्षण

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद की बाहरी दीवार में लगी तख़्ती का उद्घाटन फ़रमाया और दुआ करवाई। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए। दो बज कर पाँच मिनट पर हुज़ूर अनवर ने तशरीफ़ ला कर इस नई तामीर होने वाली मस्जिद बैतुल आफ़ियत का निरीक्षण फ़रमाया। हुज़ूर अनवर ने मस्जिद के मर्दाना हाल और फिर औरतों के हाल का निरीक्षण फ़रमाया। छोटी उम्र के बच्चों वाली औरत के लिए एक अलग जगह निर्धारित की गई है और दोनों हिस्सों में अलग अलग वाश रूमज़ बनाए गए हैं।

इस के बाद हुज़ूर अनवर ने लाइब्रेरी और दफ़्तरों का निरीक्षण फ़रमाया। आदरणीय डाक्टर एहसानुल्लाह ज़फ़र साहिब भूतपूर्व अमीर जमाअत यू स ए जो आजकल बीमार हैं वील चेयर पर मस्जिद की गैलरी में मौजूद थे। हुज़ूर अनवर ने शफकत करते हुए डाक्टर साहिब से उनका हाल पूछा और मुलाक़ात का अवसर प्रदान फरमाया। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद की बीसमनट में तशरीफ़ ले गए और मल्टी परपज़ (multi-purpose) हाल का निरीक्षण फ़रमाया। इस हाल में चार सौ लोगों खाना खा सकते हैं,सात सौ लोगों बैठ सकते हैं। ये हाल खेलों के लिए भी प्रयोग होता है। जुमा की शाम को मस्जिद के उद्घाटन आयोजन के बारे में से एक रीसीपशन का प्रोग्राम था। इस प्रोग्राम के लिए इस हाल को तय्यार किया गया था। हुज़ूर अनवर ने इस प्रबंध के बारे में से कुछ बातें पूछीं। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मर्कज़ी किचन में तशरीफ़ ले गए और निरीक्षण फ़रमाया इसी तरह कुछ प्रबन्ध के बारे में से पूछा। इस निरीक्षण के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला मस्जिद के मर्दाना हाल में तशरीफ़ ले आए और नमाज़ ज़ुहर तथा असर जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए।

जमाअत अहमदिया अमरीका की तारीख़ में फ़िलाडलफ़िया शहर को एक विशेषता प्राप्त है। जब हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ी अल्लाह अन्हो ने हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब रज़ि को जो कि इंग्लिस्तान में बतौर मुबल्लिग़ काम कर रहे थे, अमरीका चले जाने का हुक्म फ़रमाया तो आप अमरीका के पहले मुबल्लिग़ के तौर पर 26 जनवरी 1920 ई को इंग्लिस्तान की बंदरगाह Liverpool से रवाना हुए और 21 दिन के समुन्द्री सफ़र के बाद 15 फरवरी 1920 ई को अमरीका की बंदरगाह फ़िलाडलफ़िया पर उतरे लेकिन आपको देश के अंदर दाख़िल होने की इजाज़त ना दी गई और फ़ैसला किया गया कि आप जिस जहाज़ में आए हैं इसी में वापस चले जाएं।इस पर हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब रज़ि ने इस फ़ैसला के ख़िलाफ़ महिकमा आबादकारी (वाशिंगटन) में अपील की। इस पर आपको समुंद्र के किनारे एक मकान में बंद कर दिया गया और क़ैद कर दिया गया। इस मकान से बाहर

निकलने की मनाही थी मगर छत पर टहल सकते थे। इसका दरवाज़ा दिन में सिर्फ दो बार खुलता था। इस मकान में कुछ यूरोपियन भी नज़रबंद थे। हज़रत मुफ़्ती साहिब ने अवसर से फ़ायदा उठा कर अपने साथी क़ैदियों को तब्लीग़ करना शुरू कर दी जिसके नतीजा में दो माह के अंदर पंद्रह क़ैदीयों ने इस्लाम क़बूल कर लिया। इस के बाद मई 1920 ई में आपको रिहा कर दिया गया। आज उसी शहर में जहां हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब रज़ि को क़ैद में डाला गया था। अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़ल से जमाअत को एक वसीअ वारीज़ बड़ी ख़ूबसूरत मस्जिद बैतुल आफ़ियत तामीर करने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाई है। जिसका उद्घाटन इंशाअल्लाह जुम्अतुल मुबारक के साथ होगा। फ़िलाडलफ़िया जमाअत ने हुज़ूर अनवर के तीन दिन क़ियाम के दौरान बड़े पैमाना पर प्रबन्ध किए हैं। मर्दों की दो Overflow मार्कीज़ लगाई गई हैं। इसी तरह औरतों के लिए भी दो मार्कीज़ उनकी ज़्यादा संख्या के समक्ष लगाई गई हैं। लजना की सैक्योरिटी और रजिस्ट्रेशन के लिए अलग अस्थायी ऑफ़िसिज़ स्थापित किए गए हैं जबकि मर्दों के लिए सैक्योरिटी और रजिस्ट्रेशन के लिए अलग ऑफ़िसिज़ हैं। ख़िदमत ख़लक़ विभाग की एक अलग मार्की है जिस में उनके ऑफ़िसिज़ स्थापित किए गए हैं। मर्दों और औरतों के खाने के लिए अलग अलग मार्कीज़ लगाई गई हैं। विशेष मेहमानों के खाने के लिए एक अलग मार्की लगा कर प्रबंध किया गया है। लंगर ख़ाना का क़ियाम अलग तौर पर मार्की लगा कर किया गया है।

मस्जिद और Overflow मार्कीज़ में कल चार हज़ार छः सौ लोगों के लिए जगह का प्रबंध मौजूद है। ये सारी जगहें मर्दो औरत से भरी हुई नज़र आती हैं। यूं मालूम होता है कि मस्जिद और इस के इर्दगिर्द एक छोटा सा शहर आबाद कर दिया गया है।

फ़ैमिली मुलाक़ातें

प्रोग्राम के अनुसार आज शाम को फ़ैमिली मुलाक़ातें थीं। छः बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ लाए और फ़ैमिली मुलाक़ातें शुरू हुईं। आज शाम के इस सैशन में फ़िलाडलफ़िया और उसके आसपास की 14 जमाअतों से आई हुई 52 फ़ैमिलीज़ और 37 लोगों ने इन्फ़िरादी तौर पर मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। इस तरह कुल तौर पर 257 लोगों ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाकात का सौभाग्य पाया। प्रत्येक ने अपने आक़ा के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर ने शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र और छात्राओं को क़लम प्रदान फ़रमाए और छोटी उम्र के बच्चों को चॉकलेट प्रदान फ़रमाए। कुछ फ़ैमिलीज़ बड़े लंबे सफ़र तय करके मुलाक़ात के लिए पहुंची थीं। विशेष रूप से Buffalo , Rochester और Albany से आने वाली फ़ैमलीज़ लगभग 380 मील की दूरी साढ़े छः से सात घंटे में तय करके पहुंची थीं।

आमीन के प्रोग्राम की तक़रीब

मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम लगभग पौने नौ बजे तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद बैतुल आफ़ियत तशरीफ़ ले आए और आमीन के प्रोग्राम की तक़रीब का आयोजन हुआ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने निम्नलिखित 29 बच्चों और बच्चियों से क़ुरआन करीम की एक एक आयत सुनी और आख़िर पर दुआ करवाई।

प्रिय शायान अहमद ख़ान, ज़ीशान मंज़ूर अहमद, अब्दुल हकीम नूरुद्दीन रुशदी, कामरान यहया, सफ़ीर अहमद चौधरी, अंसर सफ़ीर आलिम, अब्दाल अहमद, सालिक रब्बानी, रीयान अहमद, तमसील अहमद तनवीर।

प्रिया Warizah जावेद, सफिया जावेद, सुबीका अहमद, आयात बाजवा, Parisa ताहिर, Parisa Aynour अहमद, Duha अहमद, अफ़ीफ़ा महमूद, ज़ारा महमूदा मलिक, शाफ़ा रिज़वान हमीद, Abeeha मलिक, आइज़ा शहज़ाद, युसरा अहमद, मलाइका अहमद ऐवान, आइज़ा ज़ुबैर, फ़रीहा ज़ुबैर, लाइबा मलिक, अस्फ़ा साजिद, अलीना अहमद।

आमीन के प्रोग्राम की तक़रीब के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

हुक़ूक़ुल ईबाद (बन्दों के अधिकारो) के बारे में 100 आदेश

कुछ वर्षों पुरानी बात है एक अमरीकी नए मुस्लमान ने क़ुरआन मजीद से हुक़ूक़ुल ईबाद के बारे में अल्लाह तआला के 100आदेश जमा किए। ये आदेश पूरी दुनिया में फैले मुस्लिम स्कालरज़ को भिजवाए और फिर उनसे निहायत मासूमा सा सवाल किया कि हम मुस्लमान अल्लाह तआला के इन आदेशों पर अनुकरण क्यों नहीं करते मुस्लिम स्कालरज़ के पास इस मासूम सवाल का कोई जवाब नहीं था।

वाट्स एप्प पर एक दोस्त ने इन आदेशों का अनुवाद किया है और साथ जायज़ा लेते हुए लिखा है कि मैं बड़ी देर तक अपने आप से पूछता रहा हमारे रब ने हमें क़ुरआन मजीद के माध्यम ये आदेश दे रखे हैं हम में से कितने लोग हैं जो अल्लाह तआला के इन आदेशों पर पूरा उतरते हैं। मैं ये आदेश सौ नंबर का पर्चा समझ कर अनुवाद कर रहा हूँ और मैं ये आपके सामने रख रहा हूँ आप पहले ये पर्चा हल करें फिर ख़ुद उस की मार्किंग करें फिर अपने पास या फ़ेल होने का फ़ैसला करें।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया!

1.बातचीत के दौरान बदतमीज़ी ना किया करो।

2. ग़ुस्से को क़ाबू में रखो।

3. दूसरों के साथ भलाई करो।

4. अहंकार ना करो।

5. दूसरों की गलतियां माफ़ कर दिया करो।

6. लोगों के साथ आहिस्ता बोला करो।

7. अपनी आवाज़ नीची रखा करो।

8. दूसरों का मज़ाक़ ना उड़ाया करो।

9. माता पिता की ख़िदमत और उनके साथ एहसान किया करो ।

10. मिस्कीन को खाना खिलाओ.

11. माता पिता की इजाज़त के बग़ैर उनके कमरे में दाख़िल ना हुआ करो।

12. हिसाब लिख लिया करो।

13. किसी की अंधा धुंद अनुकरण ना करो।

14. अगर मक़रूज़ मुश्किल वक़्त से गुज़र रहा हो तो उसे अदायगी के लिए और अधिक वक़्त दे दिया करो।

15. सूद ना खाओ।

16. रिश्वत ना लो।

17. वादा ना तोड़ो।

18. दूसरों पर भरोसा किया करो।

19. सच में झूठ ना मिलाया करो।

20. लोगों के बीच इन्साफ़ क़ायम किया करो।

21. इन्साफ़ के लिए मज़बूती से खड़े हो जाया करो।

22. मरने वालों की दौलत ख़ानदान के सारे लोगों में तक़सीम किया करो।

23. औरतें भी विरासत में हिस्सादार हैं।

24. यतीमों की जायदाद पर क़ब्ज़ा ना करो।

25. यतीमों की हिफ़ाज़त करो।

26. दूसरों का माल बिला ज़रूरत ख़र्च ना करो।

27. लोगों के बीच सुलह कराओ।

28. बद-गुमानी से बचोगे।

29. ग़ीबत ना करो।

30. जासूसी ना करो।

31. ख़ैरात किया करो।

32. गरीबों को खाना खिलाया करो।

33. ज़रूरतमंदों को तलाश कर के उनकी मदद किया करो।

34. फ़ुज़ूलखर्ची ना किया करो।

35. ख़ैरात कर के जतलाया ना करो।

36. मेहमानों की इज़्ज़त किया करो।

37. नेकी पहले ख़ुद करो और फिर दूसरों को तलक़ीन करो।

38. ज़मीन पर बुराई ना फैलाया करो ।

39. लोगों को मस्जिदों में दाख़िले से ना रोको।

40. सिर्फ उनके साथ लड़ो, जो तुम्हारे साथ लड़ें।

41. जंग के दौरान जंग के आदाब का ख़्याल रखो।

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 4 Thursday 18 July 2019 Issue No. 29

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

42. जंग के दौरान पीठ ना दिखाओ।
43. मज़हब में कोई सख़्ती नहीं।
44. सारे निबयों पर ईमान लाओ।
45. हैज़ के दिनों में शारीरिक सम्बन्ध ना बनाओ।
46. बच्चों को दो साल तक माँ का दूध पिलाओ।
47. व्यभिचार से बचोगे।
48. हुकमरानों को मेरिट पर चयन करो।
49. किसी पर इस की हिम्मत से ज़्यादा बोझ ना डालो।
50. निफ़ाक़ से बचोगे।
51. कायनात की तख़लीक़ और अजीब कामों के बारे में गहराई से ग़ौर करो।
52. माता पिता को उफ़ तक ना कहो और उनको ना डांटो।
53. चुने ख़ूनी रिश्तों में शादी ना करो।
54. मर्द को ख़ानदान का सरबराह होना चाहिए।
55. कंजूस ना बनो।
56. हसद ना करो।
57. एक दूसरे को क़तल ना करो।
58. फ़रेब (धोखा देने वाले) की वकालत ना करो।
59. गुनाह और शिद्दत में दूसरों के साथ सहयोग ना करो।
60. नेकी में एक दूसरे की मदद करो।
61. अधिकता सच की कसौटी नहीं होती।
62. सही रास्ते पर रहो।
63. जुर्मों की सज़ा देकर मिसाल क़ायम करो।
64. गुनाह और नाइंसाफ़ी के ख़िलाफ़ कोशिश करते रहो।
65. मुर्दा जानवर, ख़ून और सूअर का गोश्त हराम है।
66. शराब और दूसरे नशों से परहेज़ करो।
67. जूआ ना खेलो।
68. हेराफेरी ना करो।
69. चुग़ुली ना खाओ।
70. खाओ और पियो लेकिन इसराफ़ (व्यर्थ) ना करो।
71. नमाज़ के वक़्त अच्छे कपड़े पहनो।
72. आपसे जो लोग मदद और सुरक्षा मांगें उनकी हिफ़ाज़त करो उन्हें मदद दो।
73. पवित्रता क़ायम रखो।
74. अल्लाह की रहमत से कभी मायूस ना हो अल्लाह अन्जाने में की जाने वाली गलतियां माफ़ कर देता है।
76. लोगों को अक्लमन्दी और अच्छी हिदायत के साथ अल्लाह की तरफ़ बुलाओ।
77. कोई शख़्स किसी के गुनाहों का बोझ नहीं उठाएगा।
78. ग़रीबी के ख़ौफ़ से अपने बच्चों को क़तल ना करो।
79. जिसके बारे में इल्म ना हो उस का पीछा ना करो।
80. छुपी हुई चीज़ों से दूर रहा करो (खोज ना लगाओ)।
81. इजाज़त के बग़ैर दूसरों के घरों में दाख़िल ना हो।

पृष्ठ 1 का शेष

इलहाम की ज़रूरत हार्दिक सन्तोष और दिल की दृढ़ता के लिए बहुत ज़रूरी है। मेरे कहने का मतलब यह है कि सबसे पहले अक़्ल से काम लो और यह याद रखो कि जो अक़्ल से काम लेगा इस्लाम का ख़ुदा उसे ज़रूर ही नज़र आ जाएगा। क्योंकि दरख़्तों के पत्ते पते पर और आसमान के ग्रहों पर इस का नाम बड़े मोटे अक्षरों में लिखा हुआ है। लेकिन बिलकुल अक़्ल के ही अधीन ना बन जाओ ताकि इलाही इलहाम के सम्मान को खो बैठो जिसके बग़ैर ना वास्तविक तसल्ली और ना उच्च अख़लाक़ नसीब हो सकते हैं। ब्रह्मो लोग भी शांति और सच्चा नूर नजात का हासिल नहीं कर सकते। इसलिए कि वे इलहाम की ज़रूरत को मानने वाले नहीं। ऐसे लोग जो अक़्ल के बंदे हो कर इलहाम को व्यर्थ क़रार देते हैं। मैं बिलकुल ठीक कहता हूँ कि अक़्ल से भी काम नहीं लेते। क़ुरआन करीम में इन लोगों को जो अक़्ल से काम लेते हैं ऊलुल अल्बाब फ़रमाया है। फिर उस के आगे फ़रमाता है

اَلَّذِيْنَ يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِيَامًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰى جُنُوْبِهِمْ ۔ الاٰية

(आले इम्रान:192) इस आयत में अल्लाह तआला ने दूसरा पहलू वर्णन किया है कि ऊलुल अलबाब और नेक अक़्ल भी वही रखते हैं जो सामर्थवान अल्लाह का ज़िक्र उठते बैठते करते हैं। यह गुमान ना करना चाहिए कि अक़्ल ऐसी चीज़ें हैं जो यूं ही प्राप्त हो सकती हैं। नहीं।

☆ ☆ ☆
☆ ☆

82. पड़ोसियों के साथ हुस्न सुलूक से पेश आओ।
83. ज़मीन पर विनम्रता के साथ चलो।
84.दुनिया से अपने हिस्से का काम पूर्ण कर के जाओ।
85. अल्लाह की ज़ात के साथ किसी को शरीक ना करो।
86. समलैंगिता में ना पड़ो।
87. सही (सच) का साथ दो, ग़लत से परहेज़ करो।
88. ज़मीन पर ढिटाई से ना चलो।
89. औरतें अपनी सुन्दरता की प्रदर्शनी ना करें।
90.अल्लाह शिर्क के सिवा सारे गुनाह माफ़ कर देता है।
91. क़रीबी रिश्तेदारों के साथ हुस्न सुलूक करो।
92. बुराई को अच्छाई से ख़त्म करो।
93. फ़ैसले परामर्शों के साथ किया करो।
94. तुम में वे अधिक सम्मान्नीय है जो ज़्यादा परहेज़गार है।
95. इस्लाम में रहबानीयत नहीं।
96. अल्लाह इल्म वालों को मुक़द्दम रखता है।
97. ग़ैर मुस्लिमों के साथ मेहरबानी और अख़लाक़ के साथ पेश आओ।
98. ख़ुद को लालच से बचाओ।
99. अल्लाह से माफ़ी माँगो वह माफ़ करने और रहम करने वाला है ।
100. जो शख़्स मांगे उसे इनकार ना करो।

☆ ☆ ☆

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

दुआ का अभिलाषी

Sohail Ahmad Nasir and famil

jamaat Ahmadiyya idra,Dist: Proliya. West Bengal

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

दुआ का अभिलाषी

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad